वनांचल की पाती

संयुक्तांक

वर्ष 18 । जुलाई -दिसम्बर, 2024 । विक्रमी संवत् 2081

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसजिानताम
देवा भागं यथा पूर्वेसञ्ज्ञानाना उपासते ।।

वनवासी रक्षा परिवार फाउन्डेशन

(वन वनबंधुओं एवं नगरीय वंचित समाज के उत्थान को समर्पित)

पाठक के नाम पाती

वीरेन्द्र कुमार शर्मा
संगठन प्रभारी,
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

पिछले 47 वर्षों के प्रचारक जीवन में भिन्न–भिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए, विशेष रूप से पिछले 18 वर्ष एकल के साथ जुड़कर काम करने से मन में यह विचार आता रहा कि वंचित और वनवासी समाज के साथ नगरीय सामान्य तथा सम्पन्न परिवार के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन के लिये क्या किया जा सकता है। इस सोच का परिणाम 'संस्कार परिवार योजना' कोरोना काल में प्रारंभ हुई, पर यह 'संस्कार परिवार योजना' नगरीय परिवारों तक ही सीमित थी। वंचित तथा वनवासी समाज को संस्कार, शिक्षा, स्वावलंबन तथा सुरक्षा से जोड़ने के लिए प्रतिभा विकास केंद्र का कार्य आरंभ हुआ । दिल्ली के वंचित समाज को ध्यान में रखकर प्रारंभ किया गया, प्रतिभा विकास केंद्र आज देश के 16 प्रांतों के 1032 गांव तथा हजारों वनवासी परिवारों तक पहुंचा। कार्य का विस्तार तथा विकास लक्ष्य के अनुरूप हो–इस दिशा में सतत चिंतन चलता रहा। समाज के विभिन्न समूहों के चिन्तको से विचारों के आदान–प्रदान से प्राप्त निष्कर्ष के अनुरूप कार्य परिणामकारी हो यह सदैव चिंता का विषय रहा ।

दिल्ली के 23 जिले तथा 21 दिसंबर का केंद्रीय कार्यक्रम के आयोजन ने सभी कार्यकर्ताओं के साथ मुझे भी चिंतामुक्त किया है। प्रतिभा विकास केंद्र के भैया बहनों ने जिस प्रकार से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन, प्रदर्शनी के साथ–साथ मंचीय कार्यक्रम में किया यह माननीय भैया जी, स्वामी ज्ञानानंद जी तथा कार्यक्रम में उपस्थित समाज के प्रभावशाली बंधुओं, जो संस्था के सहयोगी भी हैं, की साकारात्मक उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया आत्मविश्वास जगाने वाला है कि बच्चों का विकास सही दिशा में तथा समग्रता में हो रहा है ।

अभी तक जिला से लेकर केंद्रीय स्तर तक होने वाले वार्षिक संस्कार परिवार स्नेह मिलन में बाहरी कलाकारों की मंचीय प्रस्तुति अनिवार्य रूप से होती थी। इस वर्ष ये सभी कार्यक्रम बच्चों की प्रस्तुति से पूर्ण हुए। ये संगठन के सभी दायित्ववान कार्यकर्ता तथा स्नेही बन्धुओं को आह्लादित करने वाला सिद्ध हो रहा है।

अब सबका विश्वास जाग रहा है कि भगवान के आशीर्वाद तथा कार्यकर्ताओं के परिश्रम के द्वारा हम सनातन चिंतन से संपन्न नगरीय तथा वंचित व वनवासी समाज को जोड़ने के साथ उन्हें स्वाभिमानी, स्वावलंबी, शिक्षित तथा सुरक्षित बनाने में यशस्वी होंगे ।

VRPF

राष्ट्रीय संस्करण
वनांचल की पाती
संयुक्तांक
वर्ष 18। जुलाई से दिसम्बर, 2024। विक्रमी संवत् 2081

सम्पादकीय

सितम्बर माह मे सम्पन्न केन्द्रीय चिंतन वर्ग सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। भीषण गर्मी में भी श्रीराम की तपोभूमि, जन्मभूमि तथा रामलला के चिर–प्रतीक्षित मंदिर दर्शन के एहसास ने ही कार्यकर्ताओं को ऊर्जा–उत्साह से भर दिया। इस वर्ग में उपस्थित अनेक बंधु दायित्व लेकर सक्रिय कार्यकर्ता बने।

यह संयुक्तांक **'संगठन विशेषांक'** के रुप में संगठन के विभिन्न आयामों के बढ़ते स्वरूप को प्रकट करेगा।

मा0 वीरेन्द्र जी का प्रेरक लेख के साथ 'हनुमच्चरितम्' पुस्तक के क्रमशः लेख मे 'रामदूत हनुमान' के वास्तविक स्वरूप के साथ **'संगठन के बढ़ते चरण'** विषय पर विभिन्न दृष्टिकोणों को दर्शाते हुए संगठन के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के लेख आपका ज्ञानवर्द्धन करेंगे। बच्चों को अपनी संस्कृति का ज्ञान देने संबंधी लेखों के साथ वंचित समाज के बच्चों के दायित्व को दर्शाने वाले लेख निश्चय ही बच्चों को नई दिशा देंगे।

अयोध्या में आयोजित केन्द्रीय चिंतन वर्ग में लिये गये निर्णयों तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ बंधुओं द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन के साथ 5 दिवसीय अन्तर्राज्यीय सेवाव्रती कार्यकर्ताओं का वर्ग भी सम्पन्न हुआ। इस वर्ष का केन्द्रीय कार्यक्रम **भारतमंडपम्, प्रगति मैंदान** में उपस्थित 3,000 से अधिक दर्शकों द्वारा सराहा गया। इस कार्यक्रम में आपने संगठन के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं, सहयोगियों के साथ प्रतिभा विकास केन्द्र के वंचित परिवारों के उभरते कलाकार बच्चों की योग्यता आपने के भी दर्शन किये होंगे।

अस्तु, मैं आशापूरित हूँ कि आप सुधी पाठक पाती के विभिन्न लेखों को पढ़कर 'सबका साथ सबका विकास' की भावना से आप्लावित लेकर गांव–शहर के इस पीड़ित समाज के सर्वोत्थान में खुले मन से संगठन का सहयोग करेंगे। आपके सहयोग से ही हमारे इस संगठन समाज, देश का उन्नत भारत–श्रेष्ठ भारत का सपना पूरा होगा।

जय जय श्रीराम!

डा0 रुकमणी गुप्ता
9868222540
संगठन मंत्री, केन्द्रीय महिला समिति

मार्गदर्शक मण्डल

श्री वीरेन्द्र कुमार, संगठन प्रभारी
श्री मनोज अरोडा, केंद्रीय अध्यक्ष
श्री रविदेव गुप्ता, अध्यक्ष EVFI
श्री वेद बंसल, केंद्रीय उपाध्यक्ष

सम्पादकीय मण्डल

डा. रुकमणी गुप्ता
दिग्विजय गुप्ता
माधव शर्मा

प्रकाशक

वनवासी रक्षा परिवार फाउन्डेशन

Vanvasi Raksha Parivar Foundation
B-4, Housing Society, South Extension Part 1,
New Delhi -110049, India
Ph: +91-11-47980066, +91-11-47011669
Mobile: +91-9667260911
E-mail: vrpfdelhi8@gmail.com
Web : www.vrpf.org.in

कापीराइट @ वनवासी रक्षा परिवार फाउन्डेशन, सभी अधिकार सुरक्षित

पत्रिका में प्रकाशित लेख और विचारों का अभिप्राय समिति के उद्देश्यों और योजनाओं के प्रति चेतना और जागरुकता पैदा करना है। लेखकों के व्यक्तिगत विचार और चिंतन समिति के चिंतन दर्शन से भिन्न हो सकते हैं। लेख मे दिये गये तथ्यों और आंकड़ों की सटीकता, वैधता और पूर्णता का उत्तरदायित्व लेखकों का रहेगा।

सम्पादक की अनुमति के बिना पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचना आदि के किसी भी अंश का अन्य प्रत्रिकाओं में प्रकाशन अवैधानिक होगा।

मुद्रक एवं प्रकाशक :–
श्री मनोज अरोड़ा, (अध्यक्ष),
वनवासी रक्षा परिवार फाउन्डेशन द्वारा प्रकाशित
मुद्रकः प्रिन्टेक इन्टरनेशनल,
A-6/D, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली–95 से मुद्रित।
ई–मेल: printechinternational@gmail.com

शब्दाभिनंदन

जय सियाराम! जय अयोध्या धाम! मैं अति हर्षतिरेक में हूँ कि 3 दिवसीय केन्द्रीय चिंतन वर्ग श्रीरामलला के दर्शन के साथ अयोध्या धाम में सम्पन्न हुआ। इस वर्ग में सक्रिय कार्यकर्ताओं के साथ अन्य कार्यरत बंधुओं का भी जाना हुआ। जिन्हें वर्ग में संगठन के कार्यों को भलीभांति समझकर दायित्ववान् कार्यकर्ता बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। मुझे पूरा विश्वास है कि ये उत्साही कार्यकर्ता वर्तमान कार्यकर्ताओं से मार्गदर्शन प्राप्त कर कंधे से कंधा मिलाकर संगठन को निरंतर प्रगति की ओर बढ़ते रहेंगे।

मैं यह जानकर भी संतुष्ट हूं कि अयोध्या धाम यात्रा से संगठन को इतनी संख्या में कार्यकर्ता एक साथ ही मिल गए।

बन्धुओं ! यह **'संगठन विशेषांक'** संगठन की चहुँ ओर प्रगति का द्योतक है। कुछ वर्ष प्रयास के अनन्तर वर्ष 2007 में रक्षा परिवार बनाने की शुरुआत हुई। यह संगठन अब जीवन के 17 वर्ष पूरे कर युवावस्था में पहुंच गया है। वर्ष 2020 से करोनाकाल के वैश्विक दुष्प्रभाव को भी सकारात्मक उपलब्धि बनाते हुए संगठन ने ऑनलाइन बैठकों के आयोजन, योग–प्राणायाम के अभ्यास तथा नए–पुराने नगरीय बंधुओं को 'वनयात्रा दर्शन' के द्वारा संगठन को नई ऊंचाई तक पहुंचाया।

वर्ष 2022 में मा0 वीरेंद्र जी की प्रेरणा से दिल्ली एन.सी.आर में प्रतिभा विकास केंद्र संचालन का नया आयाम प्रारंभ किया। कार्यकर्ताओं के परिश्रम से ढाई वर्ष के कम समय में भी दिल्ली एन.सी.आर में 100 तथा देश के विभिन्न प्रांतो राजस्थान, बिहार, मध्य प्रदेश, झारखंड, असम, बंगाल तथा तमिलनाडु के अप्रभावग्रस्त क्षेत्रों में लगभग 1000 प्रतिभा विकास केंद्रों के माध्यम से वनवासी वंचित पीड़ित समाज के बच्चों को शिक्षित संस्कारित करने का कार्य चल रहा है। इन केंद्रों में 25000 बच्चे पढ़ रहे हैं। निश्चय ही यह कार्य संगठन की प्रगति का दर्शन है। इस आयाम से वंचित समाज के शिक्षण के माध्यम से देश में समरस समाज की स्थापना के साथ वंचित समाज पुनः अपने पुश्तैनी कार्य बढ़ई, प्लंबर, इलेक्ट्रिशन आदि कार्यों में निष्णात होकर हिंदू परिवारों में विधर्मियों के प्रभाव को निर्मूल करने में सफल होगा।

प्रतिभा विकास केंद्र के आचार्यों ने इन बच्चों में दबी प्रतिभा को जागृत कर अब संगठन के नगरशः, जिलाशः, कार्यक्रमों में प्रत्यक्षीकरण के साथ आप धर्मप्रेमियों ने 21 दिसम्बर, 2024 को संगठन के वार्षिक केंद्रीय कार्यक्रम में भी उत्तम कलाकारों के रूप में प्रतिभा का दर्शन किया। अतः अब संगठन को भी बाहर से किसी कलाकार को बुलाने की आवश्यकता नहीं रही। निश्चित ही ये सराहनीय कार्य है।

नगरीय बंधु वनयात्रा आयोजन द्वारा वनवासी क्षेत्र में संगठन के कार्यों–प्रतिभा विकास केंद्र, विद्यालय, कंप्यूटर केंद्रों, संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रम का दर्शन करते रहते हैं, जिससे संगठन के वर्तमान सहयोगी बंधु नये वनयात्रियों को संगठन से जोड़ने में सफल हों सकें, तथा नई योजनाओं के कार्यान्वयन का सुझाव भी दे। वनयात्रा द्वारा संगठन को आर्थिक सहयोगी भी मिल रहे है।

अंत में, मैं आप सब नगरीय बंधुओं से निवेदन करता हूं कि हिंदू समाज के संरक्षण–संवर्धन हेतु संगठन की स्थायी 'संस्कार परिवार मिलन' योजना को अपने परिवार मे प्रतिदिन कार्यान्वित करें। अपने मित्रों–संबंधी–परिवारजनों को भी नगरशः, जिलाशः, वार्षिक कार्यक्रमों में आमंत्रित कर देश समाज तथा धर्म के प्रति अपने दायित्वों को यथा सामर्थ्य निभाते हुए देश की विश्व गुरु बनाने को दिशा में आगे बढ़ाएं।

जय सनातन जय भारत!

आपका शुभेच्छु

मनोज अरोड़ा
केन्द्रीय अध्यक्ष
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

शुभकामना संदेश

आलोक कुमार
सीनियर एडवोकेट
अध्यक्ष – विश्व हिन्दू परिषद
संरक्षक – दधीचि देह दान समिति
पूर्व उपाध्यक्ष – दिल्ली विधानसभा

सन्देश

मुझे यह जानकार प्रसन्नता हुई कि वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन की वनांचल की पाती के संयुक्तांक संगठन विशेषांक का प्रकाशन हो रहा है।

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन वन एवं नगरीय वंचित समाज के उत्थान को समर्पित है जो प्रतिभा विकास केंद्र से समाज में संस्कार एवं सामर्थ्य विकसित करने का सफल प्रयास कर रहा है। वनवासी रक्षा परिवार योजना एवं चिंतन की शुरुआत 2007 में हुई जो 2014 के प्रथम वनवासी रक्षा परिवार कुंभ से रक्षा का सार्थक सन्देश हजारों परिवारों तक देने में सफल हुआ।

यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है कि वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन अपने सभी कार्यकर्ताओं के परिश्रम एवं समर्पण के साथ समाज के सहयोग से वनवासी क्षेत्रों के साथ अब दिल्ली एनसीआर के वंचित समाज के उत्थान हेतु प्रतिभा विकास केंद्र द्वारा शिक्षा, संस्कार, स्वास्थ्य, स्वावलंबन के कार्य का विस्तार करता जा रहा है। फाउंडेशन द्वारा दिल्ली एनसीआर में 100 केंद्रों के साथ 11 प्रांतों में 953 प्रतिभा विकास केंद्र संचालित किये जा रहे है।

मुझे विश्वास है कि फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित होने जा रही वनांचल की पाती का संगठन विशेषांक फाउंडेशन द्वारा हो रहे अनेक कार्यों व समाज के विषय में उपयोगी व सार्थक जानकारी उपलब्ध कराएगा।

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के सभी कार्यकर्ताओं को ढेर सारी शुभकामनाएं।

सादर

भवदीय

29 11 2024

आलोक कुमार, सीनियर एडवोकेट

W-99, ग्रेटर कैलाश I, नई दिल्ली-110 048
मो० : +91-98101 27735 | ई-मेल : akl.alokkumar@gmail.com

शुभकामना संदेश

वनांचल की पाती हेतु संदेश

किसी भी समाज के उत्थान में शिक्षा एवं संस्कार का बहुत बड़ा महत्व है। सुदुर जंगल–पहाड़ों में रहने वाले वनवासी व जन जाति समाज का विकास भी शिक्षा पर आधारित हैं। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन प्रतिभा विकास केन्द्रों के संचालन द्वारा वनवासी समाज के साथ नगरीय वंचित एवं उपेक्षित समाज को भी शिक्षा संस्कार स्वावलंबन प्रदान करने का कार्य कर रहा है। संस्था द्वारा किये जा रहे कल्याणकारी कार्यों का विवरण **वनांचल की पाती** में समाज के बंधुओं को जगाने का माध्यम बनेगा।

यह पत्रिका निश्चय ही राष्ट्रहित में वन बंधुओं तथा नगरीय वंचित समाज के सहयोगार्थ जन–जन का मार्गदर्शन करेगी। मेरा सहयोग व आशीर्वाद संस्था को अनवरत मिलता रहेगा।

केन्द्रीय कार्यक्रम के अवसर पर इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बहुत–बहुत शुभकामनाएँ !

रोहतास गोयल
(ओमेक्स)

शुभकामना संदेश

ARYA RAVI DEV GUPT
M.Com., LL.B., F.C.M.A.

Ekal Vidyalaya Foundation of India
Chairman

Hind Punarutthan Sangh Trust
Chairman

Rajarya Sabha Samiti, New Delhi
President

Dakshin Delhi Ved Prachar Mandal
President

Ved Sansthan, New Delhi
Secretary

Trikon Machine Pvt Ltd
Chairman

Vipul Sameer Agencies LLP
Partner

Date 10. 12. 2024

ओ३म्

शुभाशंसा

मानव शरीर की भांति ही समाज पुरुष का भी एक शरीर होता है जिसके प्रत्येक अंग को स्वस्थ रखना उसके सुचारु रूप से संचालन के लिये अनिवार्य है। यह समाज वनों, ग्रामों व नगरों में निवास करता है।

अतएव प्रत्येक क्षेत्र के निर्बल, वंचित व पीड़ित निवासियों की सेवा-सुश्रुषा करने हेतु ही वनवासी रक्षा परिवार फाउन्डेशन की सन 2001 में स्थापना हुई।

आज देश के, दिल्ली NCR के अतिरिक्त अनेक प्रांतों में लगभग एक हजार "प्रतिभा विकास केन्द्रों" के माध्यम से उपरोक्त प्रत्येक क्षेत्र के वंचित समाज के बच्चों का, शिक्षा, संस्कार व रोजगार परक प्रशिक्षण द्वारा, भविष्य संवारा जा रहा है। अपना घर-बार छोड़कर आजीविका की तलाश में महानगरों की झुग्गी-झोंपड़ी बस्तियों में बसे परिवारों के वंचित बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

वनवासी रक्षा परिवार फाउन्डेशन द्वारा प्रकाशित "वनांचल की पाती" द्वारा अपना "संगठन अंक" निकालने के शुभ अवसर पर मैं इस पुनीत कार्य में संलग्न सभी समाजसेवी कार्यकर्ताओं को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

आशा है कि यह विशेषांक संगठन की समस्त प्रेरणास्पद गतिविधियों की जानकारी जन-सामान्य तक पहुंचाने में सहायक होगा।

— शुभेच्छु
आर्य रविदेव गुप्त
10/12/24

B-5/108, Safdarjung Enclave, New Delhi-110029 | +91 11 49869230, 9818006185 | gupta.ravidev3@gmail.com

शुभकामना संदेश

सुरिन्दर चावला
कैमी ग्रुप

दिल में हमने ठान लिया है,
जीवन का मकसद जान लिया है,
मानवता को पहचान लिया है,
समाज सेवा ही सच्चा धर्म है,
इसको हमने मान लिया है।

संगठन विशेषांक संगठन प्रभारी मा0 वीरेन्द्र जी की दूर दृष्टि एवं कर्तव्य निश्ठा ओर निस्वार्थ प्रयास के साथ लगे सहयोगी कार्यकर्ता भारत को विश्व गुरू बनाने में योगदान कर रहे है।

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन का लक्ष्य वन एवं नगरीय वंचित समाज को स्वावलंबी बनाने का जो कार्य वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन कर रहा है। उसमें जो रक्षा परिवार इस कार्य में सहयोग कर रहें है वनवासी रक्षा परिवार उन सबका हृदय से स्वागत करता है।

अपने विभिन्न प्रकल्पों को समाज में पहुंचाने के लिये प्रकाशित 'वनांचल की पाती' के 'संगठन विशेशांक' के प्रकाशन में प्रयासरत सभी कार्यकर्ताओं को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ!

समस्त वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन को मेरा सादर प्रणाम्!

शुभकामना संदेश

श्री वीर बजरंगबली की जय

आदरणीय मातृ शक्ति एवम बन्धु बान्धव

सभी का वनवासी ~~रक्षा परिवार~~
रक्षापरिवार
नमस्कार करता है

आप को यह जानकर खुशी होगी वनवासी रक्षा परिवार देश में अलख जगाने का काम कर रहा है एक निर्धन परिवार के बच्चो को शीक्षा देना संस्कार देना योग करवाना निरोगी कैसे रह सकते है यह ज्ञान देना और परिवारो एक साथ बैठ कर आपस मे चर्चा करना समुहीक भोजन जमीन बैठ कर ~~करना~~। भोजन करना यह पुरा कार्य आप के द्वारा ही संभव है इसके लिये सरकार से कोई पैसा दान नही लेते है यह सहयोग राशी केवल एक गॉव का 5 हजार केवल है

1 एक गॉव का केवल 5000
5 गांव का केवल 25000
10 गाव का " 50000
25 गांव का " 125000 चैक के द्वारा 80 जी के तहत छुट हैं कृपा करके इसके हर परिवार कम से कम 1 गॉव का सहयोग के घर 2 में दीपक जलाना है हिन्दी को ~~जगाना~~ जगाना है धन्यवाद

आपका सेवक
वेदप्रकाश बंसल
पीतम पुरा दिल्ली

संगठन के बढ़ते चरण

त्यागपूर्वक भोग

वीरेन्द्र कुमार शर्मा
संगठन प्रभारी,
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

ईशावास्य उपनिषद् में कहा गया है :–

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।

वनवासी रक्षा परिवार योजना अपने स्थापना के प्रथम दिन से ही प्रत्येक व्यक्ति में त्याग पूर्वक भोग का भाव जागृत कर संपूर्ण समाज को संस्कारित कर रहा है । संस्कार से ही कर्तव्यबोध के साथ त्याग–भाव जागृत होते हैं । इसीलिए भारतीय संस्कृति में त्याग को सर्वाधिक महत्व दिया गया है । मनुष्य की कई श्रेणियां है –

एक जो देकर खाता है , दूसरा जो परिश्रम कर खाता है, तीसरा जो छीन कर खाता है और चौथी श्रेणी मांग कर खाने वालों की है। मांग कर खाना मनुष्य की दीनता और विवशता को प्रकट करता है, छीन कर खाना पशुता को प्रकट करता है परन्तु जो परिश्रम करके खाता है वह मनुष्यत्व को प्रकट करता है, लेकिन जो दूसरों को खिलाकर खाता है वह देवत्व को प्रकट करता है, जो कर्तव्य के द्वारा ही संभव है। कर्तव्य सीखना पड़ता है संस्कार एवं अभ्यास के द्वारा जिसे साधना भी कहते हैं। परन्तु छीनने के लिए स्वाभिमान छोड़कर दूसरे के साधन पर अधिकार करना यह दानवीय प्रवृत्ति है, ऐसे व्यक्ति मनुष्य शरीर में भी पशु सदृश्य है।

दानवीय वृत्ति का व्यक्ति अर्थात अधिकारवादी व्यक्ति परिवार, समाज, प्रकृति, सबके लिए संकट का कारण बनता है। और, यह सभी प्राणियों में सहज होता है, इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है –

''आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीना: पशुभि: समाना:।।

दुष्टवृत्ति वाले व्यक्ति को लालच, भय, क्रोध और झूठ से प्रशिक्षित करने के लिए दुनिया में कोई अधिकृत प्रशिक्षण नहीं चलता होगा परन्तु संपूर्ण विश्व में कर्तव्यपथ पर चलने, सेवा, दान, सत्य,क्षमा आदि को जागृत करने के लिए अनेक प्रयत्न समाज के सज्जन व्यक्तियों तथा मठ, मंदिर, गुरुकुल, पुजारी इत्यादि अनेक संस्थाओं द्वारा किया जा रहे हैं।

इन प्रयत्नों में सनातन चिंतन द्वारा किया जाने वाला प्रयत्न सर्वाधिक प्रभावी रहा है। इस पूरी प्रक्रिया को **संस्कार प्रक्रिया** कहते हैं जो मां के गर्भ में बच्चे के आते ही प्रारंभ हो जाता है। वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन, संस्कार परिवार योजना द्वारा यह कार्य प्रारंभ से ही कर रहा है। इस कार्य का आरंभ धार्मिक चित्रों तथा लॉकेट के वितरण से प्रारंभ होकर सत्संग, भजन एवं कथा होते हुए अब दैनिक परिवार मिलन, मासिक एवं वार्षिक परिवारों का मिलन तथा वंचित वनवासी बच्चों का संस्कार, शिक्षण तथा स्वावलंबन का कार्य कर रहा है। इस कार्य की पूर्ति हेतु 2007 में प्रथम समिति के निर्माण से संगठन की इकाई

प्रारंभ हुई जो आज दिल्ली एनसीआर में 200 समितियां तथा देश के 16 प्रान्तों में हजार से अधिक समितियां कार्य कर रही हैं । जिसमें हजारों बच्चों की शिक्षा एवं संस्कार के साथ लाखों परिवार संस्कार के कार्य से जुड़ रहे हैं । संगठन–विस्तार के साथ विकास का सोपान चढ़ता जा रहा है । सनातन परंपरा तथा संस्कारों के बीजारोपण का आधार प्रारंभ से ही परिवार व्यवस्था रही है परन्तु मैकालियन शिक्षा व्यवस्था ने सनातन परिवार व्यवस्था को कमजोर किया।

जब तक अंग्रेज शासक थे तब तक हमारा समाज अंग्रेजी शासन के साथ उनके द्वारा स्थापित शिक्षा व्यवस्था से भी लड़ता रहा, उसे कभी स्वीकार नहीं किया परन्तुअंग्रेजों के जाने के बाद भारतीय चेहरे वाले अंग्रेजों के मानस पुत्र जो नाम से तो भारतीय थे परंतु संस्कार से अंग्रेज बन चुके थे। वे जब अंग्रेजी परंपरा को आगे बढ़ाने लगे तब धीरे–धीरे आम हिंदू दिग्भ्रमित होते गए। परिणामस्वरूप 800 वर्षों के संघर्ष में श्रद्धा केद्रों के ध्वस्त होने और बड़े पैमाने पर नरसंहार होने पर जो संकट नहीं आया वह आजादी के 75 वर्षों में आ गया । परिवार व्यवस्था के कमजोर होने से आने वाली पीढ़ियां सनातन परंपरा, संस्कृति तथा संस्कार पद्धति से दूर होता जा रही हैं ।

'मातृ देवो भवः पितृ देवो भवः' के इस देश में वृद्धाश्रम बढ़ते जा रहे हैं, मतांतरण बढ़ता जा रहा है, हम दरिद्र नारायण का मंत्र भूलते जा रहे हैं, 'नर सेवा–नारायण सेवा' के भाव कमजोर पड रहे हैं। हमारे संस्कृति में नदियों को मां, पहाड़ों को देवता मानकर प्रकृति के पूजन की परंपरा रही है। इसे भूलकर पर्यावरण का नाश करते जा रहे हैं । व्यक्ति जीवन के कर्तव्य, समाज के प्रति दायित्व, देश की भक्ति, पर्यावरण की रक्षा आदि के प्रति जो हमारा दायित्व हमारे पूर्वजों ने बताया था उसे भूलते जा रहे हैं । कर्मवाद के संदेश की जगह भोगवाद की प्राथमिकता संकट का कारण है । इन विषयों से व्यक्ति, परिवार को मुक्त करने के लिए वनवासी रक्षा परिवार द्वारा–**रक्षा परिवार योजना** जिसके द्वारा समाज के संपन्न वर्ग में, एवं **संस्कार परिवार योजना** जिसके द्वारा मध्यम वर्ग में तथा **प्रतिभा विकास केंद्र** जिसके द्वारा वंचित एवं वनवासी समाज में कार्य कर रहा है ।

रक्षा परिवार योजना द्वारा संपन्न परिवार में संस्कार के साथ दायित्व बोध जागृत कर वनवासी एवं वंचित परिवारों को गोद लेने के आह्वान पर हजारों परिवार रक्षा परिवार बनकर साधन उपलब्ध करा रहे हैं ।

परिवार में दैनिक मिलन के साथ परिवारों का मासिक तथा वार्षिक मिलन द्वारा सनातन संस्कारों से परिवार को संस्कारित करने का कार्य संस्कार परिवार योजना द्वारा बढ़ता जा रहा है ।

वंचित तथा वनवासी परिवारों के बच्चों को दैनिक दो घंटे की शिक्षा जिसमें 30 मिनट संस्कार शिक्षा तथा 90 मिनट की उनके विषयानुसार शिक्षा के साथ उनके प्रतिभा का विकास तथा मासिक रूप से उनके परिवारों को सनातन संस्कारों से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। जिसमें मंत्रों के उच्चारण के साथ आसन, प्राणायाम, स्वच्छता, स्वदेशी, पर्यावरण रक्षा आदि के भाव जागरण का कार्य चल रहा है ।

वनांचल की पाती

तन–मन–धन द्वारा व्यक्ति, परिवार, समाज तथा देश हित में कार्य करने वाले, सभी परिस्थितियों में धैर्यपूर्वक कठोर परिश्रम तथा समर्पण भाव रखने वाले कार्यकर्ताओं के समूह से संगठन बनता है। वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन प्रथम दिन से ही यह कार्य कर रहा है ऐसे कार्यकर्ता तथा समाज को संगठन के ध्येय कार्य तथा कार्य पद्धति से जोड़ने में **वनांचल की पाती** की प्रमुख भूमिका है। यह समाज को संगठन की गतिविधियों से जोड़ती है तथा कार्यकर्ताओं को काम के स्वरूप, भविष्य के लक्ष्य का संदेश देती है ।

संगठन के विस्तार एवं विकास को तीन चरणों में देखा जा सकता है, प्रथम चरण 2008 से 2014 तक जब एक समिति से चलकर विभाग स्तर तक तथा विभाग से कुछ जिलों में संगठन की इकाई बनी थी । उस समय कार्य का स्वरूप बैठक, गोष्ठी, वनयात्रा ही कार्यकर्ता निर्माण का आधार था। प्रथम वनवासी रक्षा परिवार कुंभ जापानी पार्क के भव्य तथा विशाल मंच से निवृत शंकराचार्य पूज्य स्वामी सत्यमित्रानंद जी, पूज्य सरसंघचालक माननीय मोहन राव भागवत जी के साथ माननीय अशोक जी सिंघल का मार्गदर्शन संगठन के विकास तथा विस्तार में सहायक सिद्ध हुआ । माननीय श्याम जी गुप्त ने अपनी पुस्तक में प्रतिक्रिया दी कि दिल्ली में संस्कार – शिक्षा का यह कार्य पत्थर पर दूब जमाने जैसा हुआ ।

21 फरवरी 2020 के कुंभ तक संगठन की इकाई का विस्तार राष्ट्र रक्षा यज्ञों के आयोजन द्वारा 100 नगरों तक पहुंचा । कार्य का विकास वनवासी परिवारों से नगरीय परिवारों तक और रक्षा परिवार से संस्कार परिवार तक की यह यात्रा ने सनातन परिवार व्यवस्था को सुदृढ़ करने के साथ एकल परिवार से संयुक्त परिवार, **संस्कारित परिवार** तथा सुरक्षित परिवार के भाव को दृढ़ किया।

प्रतिभा विकास केंद्र का चिंतन वनवासी तथा वंचित परिवारों के लिए वरदान सिद्ध हुआ। समिति, सेवाव्रती तथा आचार्यों के चिंतनपूर्ण परिश्रम से चमत्कारिक परिणाम का विश्वास जग रहा है ।

भविष्य में संगठन की यह यात्रा दिल्ली की वंचित बस्तियों से होती हुआ लाखों वनवासी परिवारों तक ले जाने के संकल्प में नगरीय तथा ग्रामीण समाज दृढ़ता से लगेंगे, इस विश्वास के साथ हम सब प्रभु के आशीर्वाद से यशस्वी होंगे ।

———×———

"सशक्त नारी, समृद्ध समाज"

सामाजिक उत्तरदायित्व, परोपकार और सामाजिक प्रभाव में महिला शक्ति

पायल कनोड़िआ
अध्यक्ष एवं ट्रस्टी
M3M फाउंडेशन

जब मैं एक छोटे से गाँव की मिट्टी की गंध को महसूस करती हूँ, जहाँ महिलाएं अपने घरों के आँगन में बच्चों को पढ़ाती हैं या किसी महिला को अपने खेत में परिश्रम करते देखती हूँ, तो मुझे याद आता है कि असली ताकत हमारे ग्रामीण भारत की इन महिलाओं में बसती है। इन महिलाओं के भीतर जो अद्वितीय दृष्टिकोण और सहानुभूतिपूर्ण नेतृत्व छिपा है, वही समाज को आगे बढ़ाने की क्षमता रखता है। यह शक्ति सिर्फ शब्दों में नहीं, बल्कि कहानियों में झलकती है—कहानियां जो हमें महिलाओं की निस्वार्थ सेवा और योगदान की गहराई को समझने का मौका देती हैं।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था, जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होता, तब तक विश्व के कल्याण का कोई अवसर नहीं है। एक पक्षी एक पंख से नहीं उड़ सकता। इन शब्दों का महत्व मैंने तब महसूस किया, जब मैंने देश के 22 राज्यों और 3 केंद्र शासित प्रदेशों में विभिन्न समुदायों के साथ काम करते हुए महिलाओं को उनके अधिकारों और उनके सपनों के लिए खड़े होते देखा।

मुझे याद है, एक बार मैं नूह जिले (मेवात) के राठीवास जैसे एक दूरदराज गांव में एक महिला, कुंती से मिली। वह न केवल अपने परिवार के लिए मिलेट के व्यंजन बना रही थी, बल्कि अपने खेत में जैविक खेती का प्रयोग कर अपनी छोटी सी भूमि को एक बड़े अवसर में बदल रही थी। जब मैंने उससे पूछा कि वह कैसे यह सब कर पाती है, उसने मुस्कुराते हुए कहा, ष्मैं जो भी करती हूँ, अपने बच्चों के भविष्य के लिए और अपनी साथी महिलाओं के लिए करती हूँ। मुझे बस थोड़ा मार्गदर्शन मिला, और मैंने सोचा, मैं क्यों नहीं कर सकती?

कुंती जैसी महिलाएं बताती हैं कि जब अवसर और उद्देश्य मिलते हैं, तो असाधारण परिवर्तन संभव हो जाता है। कुंती ने हमारे कौशल विकास कार्यक्रम के तहत मिलेट के व्यंजन बनाने सीखे और आज वह अपने गांव में अन्य महिलाओं को प्रशिक्षित कर रही है। इस बदलाव को देख मैं सोचती हूँ कि महिलाओं के अंदर जो शक्ति और सहनशीलता है, वह उन्हें अपनी परिस्थितियों से आगे बढ़ने और अपने परिवारों और समुदायों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनने में मदद करती है।

भारतीय संस्कृति ने हमेशा महिलाओं को सम्मानित स्थान दिया है। गार्गी, वैष्णवी और मैत्रेयी जैसी विदुषियां हमें यह सिखाती हैं कि ज्ञान और सेवा के माध्यम से समाज को दिशा दी जा सकती है। रानी अहिल्याबाई होल्कर जैसी ऐतिहासिक शख्सियतों ने न केवल अपने साम्राज्य को संभाला, बल्कि सामुदायिक कल्याण के लिए

अस्पतालों, मंदिरों और धर्मशालाओं का निर्माण किया।

आज भी, जब मैं सुमित्रा जैसी प्रवासी महिलाओं को उनके बच्चों को शिक्षित करने के लिए संघर्ष करते देखती हूँ, तो मुझे इन ऐतिहासिक महिलाओं की याद आती है। मुझे खुसी है कि iMpower कार्यक्रम में हम न केवल महिलाओं को समर्थन देते हैं, हम केवल उनकी सहायता नहीं कर रहे होते, बल्कि एक पूरी पीढ़ी को आगे बढ़ा रहे होते हैं। हाल ही में, पीलीभीत जिले में हमारी पहल 'वन जीवन' के तहत, महिलाओं को वन्यजीव संरक्षण के साथ आजीविका से जोड़ने के अवसर प्रदान किए गए। लक्ष्मी नाम की एक महिला ने इस कार्यक्रम से जुड़कर न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए पहल की, बल्कि अपने समुदाय की अन्य महिलाओं को भी पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी उठाने के लिए प्रेरित किया।

इसी तरह, हरियाणा के तावडू क्षेत्र में, कौशल विकास कार्यक्रमों के जरिए कई महिलाओं को रोजगार के अवसर मिले। इनमें से युवा महिलाओं का एक समूह, जो पहले केवल घरेलू कार्यों तक सीमित थी, आज एक बुटीक चला रही हैं, और अपने सपनों को बुनने वाली इन युवतियों ने अपने इस उद्यम का नाम हमने क्तमंजूमंअमते ही रख दिया। उन्होंने न केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति बदली, बल्कि अब वह अन्य महिलाओं को भी प्रशिक्षित कर रही हैं।

महिलाओं के नेतृत्व में CSR और परोपकार की पहले सहयोगात्मक और समावेशी दृष्टिकोण लाती हैं। उदाहरण के लिए, कौशल विकास और लाला जी की रसोई परियोजना के जरिए महिलाओं ने आत्मनिर्भरता का जो उदाहरण पेश किया है, वह दर्शाता है कि उनकी नेतृत्व क्षमता कैसे समाज को आगे बढ़ा सकती है। आज 100 से अधिक महिलाएं न केवल लखपति दीदी बन चुकी हैं बल्कि लगभग इतनी ही महिला किसानों को भी मार्गदर्शित कर रही हैं।

जैसा कि हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा है, 'वैश्विक विकास महिलाओं की भागीदारी के बिना संभव नहीं है।' कुंती, लक्ष्मी और शकुंतला जैसी महिलाएं यह साबित करती हैं कि जब महिलाएं सशक्त होती हैं, तो पूरा समाज प्रगति करता है।

CSR, परोपकार और सामाजिक प्रभाव में महिलाओं की भूमिका न केवल उनकी नेतृत्व क्षमता को दर्शाती है, बल्कि समाज को सेवा, सहानुभूति और समृद्धि का मार्ग दिखाती है। यह कहानियां हमें यह सिखाती हैं कि असली ताकत केवल शब्दों में नहीं, बल्कि सेवा और सामूहिक प्रयासों में छिपी है।

महिलाओं के सशक्तिकरण और उनके योगदान को मान्यता देते हुए, हम उस समाज का निर्माण कर सकते हैं, जहाँ सफलता की परिभाषा सेवा और साझा समृद्धि से होती है। यह न केवल हमारा कर्तव्य है, बल्कि हमारे भविष्य का निर्माण करने का एकमात्र रास्ता भी है

———×———

संगठन के बढ़ते चरण

अमिता प्रकाश
केन्द्रीय उपाध्यक्ष,
केन्द्रीय महिला समिति – प्रभारी
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

नीलांबर परिधान हरित तट पर सुन्दर है।
सूर्य–चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है।
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं।
बंदीजन खग–वृन्द, शेषफन सिंहासन है।।
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेश की।
हे मातृभूमि! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की।।

वनवासी रक्षा परिवार योजना का आरंभ ही वनवासी तथा वंचित वर्गों के कल्याण व रक्षा हेतु ही हुआ है। वनवासी रक्षा परिवार योजना व चिंतन की शुरूवात 2007 में हुयी। 2014 प्रथम वनवासी रक्षा परिवार कुंभ 21–22 दिसम्बर, 2014, हजारों परिवार तक रक्षा का सार्थक संदेश देने में सफल हुआ।

जिस मंच से स्व0 परम पूज्य सत्यमित्रानंद जी, पू0 सरसंघचालक मा0 मोहन भागवत जी व विश्व हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष श्रदेद्ध स्व0 आशोक सिंघ जी क मार्गदर्शन द्वारा राश्ट्र रक्षा का संकल्प लिया गया इस का परिणाम था कि संगठन को विस्तार हुआ व विकास को भी गति मिले।

द्वितीय कुंभ का लक्ष्य था नगरशः संगठन की ईकाइयों का विस्तार इसके लिये राष्ट्र–रक्षा–यज्ञों का संकल्प लिया गया ये संकल्प 99 यज्ञों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस प्रकार ये संदेश नगरीय परिवारों तक पहुँचा।

द्वितीय कुंभ के बाद करोना महामारी का प्रकोप में पूरे विश्व के साथ–साथ भारत को भी संकट में डाल दिया ऐसे संकट के समय में संगठन ने अनेक समाज सेवा के कार्य किये समाज क आत्म विश्वास को बचने व स्वास्थ्य को ठीक रखने हेतु ऑनलाइन मंत्रों का उच्चारण तथा योग अभ्यास को प्रारंभ किया गया आक्सीजन के लिए पेड़–पौधे लगाये गये।

इस प्रकार करोना के अंतिम वातावरण के कारण दैनिक संस्कार परिवार मिलन का आरंभ हुआ। इस प्रकार 6 मार्च को ऑनलाइन जुड़े संस्कार परिवारों का प्रत्यक्ष कार्यक्रम छत्तरपुर मंदिर, मार्कण्डेय भवन में हुआ। वहाँ करीब 3 हजार से ज्यादा परिवार को सहभागिता रही।

इस प्रकार वनवासी रक्षा परिवारों का दैनिक मिलन कार्यक्रम प्रतिदिन परिवारों में ही मासिक परिवार मिलन नगरशः व वार्षिक स्नेह संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रम का आरंभ वृहत्त रूप से हुआ।

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के प्रतिभा विकास केन्द्र का श्री गणेश शुभारम्भ 2022 के अप्रैल महीने में 4/5 केन्द्र से प्रारंभ हुआ और बहुत ही कम समय में भारत वर्ष के 13 प्रान्तों में आज लगभग 1000 से अधिक केन्द्र चल रहे हैं। जिसमें 25000 से अधिक विद्यार्थी शिक्षा, संस्कार और स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। इतने बड़े पैमाने पर इस कार्य को संचालित करने के लिए इस योजना को धरातल पर लाने वाले मार्गदर्शक, तपस्वी मा0 वीरेंद्र, जी भाईसाहब के कुशल नेतृत्व एवं वनवासी रक्षा परिवार फाउण्डेशन की समिति के समर्पित कार्यकर्ताओं की टोली निरंतर प्रयत्नशील हैं। साथ ही सेवाव्रति कार्यकर्ता भी नित्य प्रति अपने परिश्रम के द्वारा समाज के एक बड़े वर्ग को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ना है।

ढ़ाई वर्षों की अल्प अवधि में ही इसके विस्तार और जन–जन तक पहुँचाने में संगठन के कर्मठ कार्यकर्ता सहयोगियों का पूर्ण योगदान है

संगठन के कार्यकर्ताओं के लिये मैथिली शरण गुप्ता जी द्वारा रचित ये पंक्तियां

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़े, उन्हें ढकेलते हुए,
घटे न हेल–मेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी,
तभी समर्थ भाव है कि, तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

महिला समिति निरंतर प्रगति की ओर

शशी आजाद
कार्याध्यक्षा–केन्द्रीय महिला समिति
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

किसी भी संगठन की प्रगति की गति इस बात पर निभर करती है कि उसमें महिलाओं की सहभगिता कितनी है। महिला व पुरूष जब मिलकर कार्य करते है। तो वह अधिक सफल व प्रभावशाली होता है आज जरुरत है नारी को अपनी शक्ति पहचानने की। नारी स्वयं शक्ति स्वरूपा है। लक्ष्मी व दुर्गा के रुप में प्रकृति ने नारी को सशक्त बनाया है, उसे मातृत्व की शक्ति दे कर नारी अगर चाहे तो सब कुछ कर सकती है। बस उसका मन उस कार्य को करने के लिए स्वीकार होना चाहिए।

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन संस्कारित, स्वस्थ व शिक्षित समाज बनाने के लिए प्रतिबंद्ध है। इसीलिए महिलाओं की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। एक संस्कारी, पढ़ी लिखी स्वस्थ निडर बेटी ही आगे चलकर एक संस्कारी महिला बनेगी और स्वस्थ, समृद्ध व संस्कारी समाज के निर्माण में सहायक होगी।

महिला समिति की जब शुरुआत हुई तो उसका स्वरुप बहुत छोटा था। मासिक बैठक होती थी और मकर संक्राति संग्रह का कार्य महिलाओं के जिम्मे था समय के साथ–साथ महिला समिति का विस्तार शुरु हो गया। महिलाओं ने सभी विभागों में अपनी भी उपस्थिति दर्ज करवानी शुरु कर दी। इसीलिए सभी विभागों में महिला प्रभारी नियुक्त की गई।

विभागशः नियामित परिवार संस्कार परिवार मिलन के कार्यक्रम होने के फलस्वरुप महिलाओं की संख्या निरंतर बढ़ती गई और सभी विभागों में सम्पूर्ण महिला समिति का गठन शुरु हो गया जिसमें विभाग अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महामंत्री व मंत्रीयों का पद भी सुनिश्चित हुआ।

करोना काल में नियमित परिवार संस्कार के हेतु सभी स्वजन प्रतिदिन सामूहिक रुप से प्राणायाम, योग–ध्यान करने लगे। साथ में बैठकर भोजन करना, वातावरण शुद्ध करने वाले पेड़ पौधे लगाने का कार्य भी होने लगा। फलस्वरुप अधिक से अधिक महिलाएं हमारे साथ जुड़ने लगीं और जिले में भी हमारा कार्य शुरू होने से जिले में भी संयोजिका व सह–संयोजिका नियुक्त होने लगीं। शीघ्र ही नगरों में भी हम अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहे है।

महिलाओं के अपने स्वत्रंत वग्र भी हो रहे है। महिलाएं अपना वार्षिक अधिवेशन करने का प्रयास भी कर रही है। महिलाएं वनयात्रा व केन्द्रीय वार्शिक वर्ग में भी बढ़–चढ़ कर भाग ले रही है। प्रतिभा विकास केन्द्रों में भी 80 प्रतिशत आचार्या हमारी बहनें है। इसीलिए महिला समिति का यह दायित्व बनता है कि वह प्रतिभा विकास केन्द्र के संचालन में भी सहायता करे।

अभी तो इस बाज की असली उड़ान बाकी है।

अभी तो इस परिन्दे का इम्तिहान बाकी है।
अभी तो हमने लांघा है समंदर को,
अभी तो पूरा आसमान बाकी है।

×

आलस्य-प्रभाव और निदान

वीरेन्द्र कुमार शर्मा
संगठन प्रभारी,
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

समय ईश्वर द्वारा प्रदत्त है जो सबको समान रूप से प्राप्त है, जिसका सदुपयोग कर व्यक्ति जीवन के महान लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। पर आलस्य बहुमूल्य समय को नष्ट कर देता है। यही कारण है कि आलसी व्यक्ति अपने जीवन में कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल नहीं कर पाता। आलस्य का दुष्प्रभाव केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि परिवार, समाज और राष्ट्र भी इससे प्रभावित होता है। एक आलसी व्यक्ति अपने परिवार और समाज की प्रगति में बाधा बनता है। समाज में आलसी लोंगो की बढती संख्या **विश्व गुरू भारत व सोने की चिड़िया भारत** दो लक्ष्यों की प्राप्ति में बाधक है।

जीवन में सफलता तो प्रत्येक मनुष्य की आकांक्षा होती है, लेकिन सभी उसके लिए पर्याप्त परिश्रम एवं पुरुषार्थ नही कर पाते। परिश्रम एवं पुरूषार्थ के मार्ग में आलस्य एक बड़ा अवरोध है। आलस्य मानव की एक सामान्य प्रवृति है, जिसका जीवन में अत्यंत नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आलस्य से आशय है किसी कार्य को टालना, अनिच्छा से कार्य करने का प्रयास करना या समय पर कार्य न करना। यह एक ऐसी आदत है जो व्यक्ति की उन्नति में सबसे बड़ी बाधा बनती है। आलस्य के कई कारण हो सकते हैं। पहला, व्यक्ति की मानसिक स्थिति इसका मुख्य कारण होती है। कभी–कभी मनुष्य मानसिक रूप से थकान महसूस करता है और कार्य बोझिल या नीरस लगने लगता है, जिससे उसे करने में विलंब होता है। एक और अहम कारण है दृढ संकल्प का अभाव। यदि किसी व्यक्ति के जीवन में स्पष्ट लक्ष्य नहीं होता तो वह आलस्य की ओर प्रवृत्त हो सकता है।

आलस्य से छुटकारा पाने के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में दृढता से अनुशासन और परिश्रमशीलता लाए। सबसे पहले, जीवन में स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करना और उसकी पूर्ति की दिशा में क्रियाशील होना महत्वपूर्ण है। समय प्रबंधन एवं आदर्श जीवनशैली भी आलस्य को दूर करने में सहायक होते हैं। इससे व्यक्ति उर्जावान और प्रेरित महसूस करता है।

केन्द्रीय संस्कार परिवार मिलन 21 दिसम्बर, 2024

डा0 रुकमणी गुप्ता
संगठन मंत्री
केन्द्रीय महिला समिति

संगठन का केन्द्रीय (वार्षिक) संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रम 21 दिसम्बर, 2024 को दिल्ली के प्रगति मैदान, भारत मंडपम् ऑडिटोरियम में 3000 से अधिक धर्मप्रेमियों के बीच सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम से पूर्व दर्शकों ने प्रतिभा विकास केन्द्र के बच्चों द्वारा बनाये सुन्दर चित्रों, मॉडल की प्रदर्शनी का आनंद लिया। तत्पश्चात् ऑडियोटिरम में वीडियो द्वारा संगठन कार्यों की जानकारी प्राप्त की।

महिला समिति सदस्या श्रीमती मनस्वी पांडेय, श्री मयंक शेखर पूर्वी संभाग प्रभारी, केन्द्रीय मंत्री तथा प्रतिभा विकास केन्द्र के सह–संयोजक श्री वीरेन्द्र कौण्डिन्य ने मंच संचालन का कार्य संभाला।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंत्रोच्चार के साथ दीप प्रज्ज्वलन से हुआ जिसमें मा0 श्री भैयाजी जोशी (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य) मा0 मनोहर लाल खट्टर (केन्द्रीय मंत्री) श्री महेश भागचंदका (संरक्षक), डा0 अनिल अग्रवाल (प्रांत संघचालक, दिल्ली), संगठन सहयोगी श्री रोहतास गोयल (ओमेक्स), संगठन प्रभारी श्री वीरेन्द्र कुमार, मुख्य अतिथि श्री विवेक नागपाल, कार्यक्रम संयोजक श्री सुरेन्द्र चावला जी के साथ उपस्थित अतिविशिष्ट अतिथि तथा विशिष्ट अतिथियों ने भाग लिया। तत्पश्चात् संगठन द्वारा संचालित गुरुकुल के बच्चों के साथ निरीक्षिका अल्पना ठाकुर ने प्रतिभा विकास केन्द्र में प्रतिदिन अभ्यास किये जाने वाले मंत्रोच्चार तथा प्राणायामों का उपस्थित दर्शकवृन्द के साथ अभ्यास किया। निरीक्षक भरत सिंह ने एकल गीत (निर्माणों के पावन युग में.....) का सामूहिक गायन किया।

इसके पश्चात् प्रतिभा विकास केन्द्रों के स्थानीय तथा विभिन्न प्रातों से आये बच्चों ने सरस्वती वंदना, दुर्गा–स्तुति, उड़ीसा के मंयूरभंज जिले के गांव के विद्यार्थी की ओडिसी नृत्य नाटिका, लड़कों द्वारा कठिन आसनों तथा बंगाल के वीरभूम जिले की बेटियों ने 'आमी नारी जौहर... ....' के बंगाली नृत्य तथा झारसा, गुरुग्राम के बच्चों द्वारा प्रस्तुत भगिनी निवेदिता द्वारा नारी शिक्षा के प्रचार–प्रसार की नृत्य–नाठिका पर हाल में बैठे दर्शकों की बार–बार तालियों की गड़ागड़ाहट हुई। उज्जवल प्रतिभा विकास केन्द्र कंझावला के छात्रों द्वारा श्रीकृष्ण के गीता–संदेश, पूर्वोत्तर के प्रदेश मेघालय, नागालैंड, मिजोरम की आंतकवाद से मुक्ति को दर्शाती 'सात बहनें' नृत्य–नाटिका की प्रस्तुति आचार्यों की मेहनत की जीवन्त उदाहरण रही।

प्रतिभा विकास केन्द्र कार्यक्रमों के प्रथम भाग की प्रस्तुति के पश्चात् श्री मयंक शेखर ने मंच संचालन को संभालते हुए मा0 भैयाजी जोशी जी, मा0 मनोहर लाल खट्टर जी, प्रांत

संघचालक डा. अनिल अग्रवाल जी, संगठन संरक्षक श्री महेश भागचंदका मा0 वीरेन्द्र जी केन्द्रीय अध्यक्ष श्री मनोज अरोड़ा जी, कार्याध्यक्ष श्री हेमन्त बत्रा जी तथा समस्त मुख्य अतिविशिष्ट–विशिष्ट अतिथियों को मंच पर आंमत्रित किया। संगठन के कार्यकर्ताओं ने पटके तथा बच्चों द्वारा बनाये गये आकर्षक चित्रों वाले स्मृति चिन्ह से उनका सम्मान किया।

मंचीय कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्रीय अध्यक्ष **श्री मनोज अरोड़ा जी** ने मंचस्थ वरिष्ठजनों तथा ऑडिटोरियम में उपस्थित समस्त सज्जनवृन्द को वर्ष 2025 में संघ के शताब्दी वर्ष में प्रवेश करने तथा दो महापुरुषों – सरदार बल्लभाई पटेल तथा वनवासी शहीद बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर हृदय से बधाई दी। उन्होंने संकल्प दोहराया कि हम 25000 वनवासी रक्षा परिवार तथा 1 लाख संस्कार परिवार बनाने का लक्ष्य पूरा करेंगे अन्यथा तो विधर्मियों के दुष्प्रभाव से हमारी संस्कृति ही नष्ट हो जाएगी। विघार्मियों द्वारा हमारे मंदिरों को नष्ट करने, बंगला देश के हिंदुओं की दुर्दशा, वक्फ बोर्ड के दुष्परिणाम व धर्मान्तरण से मुक्ति तथा घर वापसी के प्रयास करने होंगे। तभी हम अपनी संस्कृति का संरक्षण तथा 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' तथा देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें को चरितार्थ कर पायेंगे।

मा0 वीरेन्द्र जी ने संगठन की प्रस्तावना प्रस्तुति में बताया कि देश की समस्त समस्याओं का मूल कारण हमारी सनातन संस्कृति का विस्मरण है। हमारे संगठन का उद्देश्य सम्पूर्ण हिन्दु समाज को सनातन संस्कृति से जोड़ना है। हम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से देश सेवा का कार्य करते है। मूलतः व्यक्ति ही परिवार–समाज–देश हेतु विभिन्न कार्यों का सम्पादन करता है उसके बदले बिना कुछ नहीं बदलता। अतः हिन्दू समाज में सनातन संस्कार के जागरण तथा संस्कार परिवार निर्माण हेतु संगठन ने दैनिक–मासिक–वार्षिक संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रम की योजना बनाई है। 1 लाख परिवारों को संस्कार परिवार बनाने का लक्ष्य है। इस संस्कार परिवार योजना से अधिकतम नगरीय तथा वंचित वनवासी परिवार भी जुड़े इस हेतु दिल्ली एन.सी. आर तथा विभिन्न प्रांतों में प्रतिभा विकास केन्द्रों के विधिवत संचालन द्वारा इन परिवारों के बच्चों को केवल अक्षर ज्ञान नहीं, अपितु संस्कारपूर्ण शिक्षा दी जा रही है। इनके परिवारों को भी संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रमों मे आमंत्रित कर संस्कार परिवार बनाने का क्रम चल रहा है। आज की चित्र प्रदर्शनी में अन बच्चों की योग्यता दिखी। 3 वर्षों के अल्पकाल में ही प्रतिभा विकास केन्द्रों में 1600 बच्चे पढ़ रहे हैं। भविष्य में ये बच्चे भी अपने से छोटी कक्षा के बच्चों को पढ़ायेगे। इस प्रकार श्रृंखलाबद्ध रुप से ये बच्चे भी देश–सेवा करेंगे। इस ईश्वरीय कार्य की सेवा में समाज के समृद्ध बंधुओं को इस अभियान से जोड़ा जा रहा है। आप सभी इस कार्य में सहभागी बनें।

मा0 भैया जी जोशी जी ने विभिन्न प्रांतों के

बालक—बालिकाओं की सुन्दर प्रस्तुति तथा आचार्यों के परिश्रम की सराहना करते हुए कहा कि संगठन द्वारा प्रतिभा विकास केन्द्र संचालन वंचित समाज के बच्चों की प्रतिभाओं को खोजने एवं जागरण का सकारात्मक प्रयास है। हम भारतवासी भाग्यशाली है कि हमने धर्म—संस्कृति ऋषि—मुनियों व तीर्थों की भारत भूमि में जन्म लिया है, जिसे विरासत में संस्कृति—परम्परा प्राप्त है जो जानवर से मानव तथा मानव से देवता बनने की प्रेरणा देती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जन्मे हम लोग सम्मान का जीवन जीते हुए परिवर्तन के इस कालखण्ड को देख रहे हैं, भारत का विश्व में सम्मान होते देख रहे है। हम इस संगठन से जुड़कर इस परिवर्तन के साक्षी ही नहीं इसे गति देने वाले बनें। ऋषि—मुनियों द्वारा संचालित यह देश केवल सुपर पावर नहीं अब सुपर राष्ट्र बनेगा।

हम अपने से कमजोर का सहयोग करने वाले बनें, यही आज का संदेश है। भैया जी के प्रबोधन के पश्चात् प्रतिभा विकास केन्द्र के बच्चों ने अनेक प्रभावी कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। अन्त में **गीता मनीषी पू0 स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज** ने अपने मार्गदर्शन में कहा कि संगठन प्रतिभा विकास केन्द्र संचालन द्वारा अनूठी संकल्पना को नगरीय तथा वनवासी समाज को अपना परिवार मानकर कार्यान्वित कर रहा है। इसी भाव के साथ श्रीराम ने वनवासी वंचित को गले लगाकर समता समरसता की अलख जगाई। वही कार्य अब वनवासी रक्षा परिवार के काम से प्रकाशित हो रहा हैं, संकल्पित प्रयास व संगठित सद्भावना के साथ सबको साथ लेकर चलने का यह प्रयास वन्दनीय—स्तुत्य है। **बहुत शुभकामनांए।**

कार्यक्रम संयोजक श्री सुरेन्द्र चावला जी ने कार्यक्रम आयोजन में सभी का धन्यवाद् करते हुए उपस्थित सज्जनवृन्द को भोजन प्रसाद पाने हेतु आमंत्रित किया।

श्री गणेशाय नमः

हरे कृष्ण

VRPF
2024

जय श्री राम

स्कार परिवार मिलन
भारत मंडपम
दिनांक :- 21 दिसम्बर, 2024

VRPF

भारत मंडपम
दिनांक :- 21 दिसम्बर,

(वन एवं नगरीय वंचित समाज के उत्थान को समर्पित)

भारत मंडपम

भारत मंडपम

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

संस्कार परिवार मिलन
भारत मंडपम

केन्द्रीय समिति बैठक सोल्लास सम्पन्न

वीरेन्द्र कौण्डिन्य
केन्द्रीय सह–संयोजक
प्रतिभा विकास केन्द्र

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन की व्यवस्था अनुसार केन्द्रीय समिति की बैठक वर्ष में दो बार हुआ करती है। इस वर्ष की पहली बैठक अयोध्या की पावन भूमि में सितंबर माह में संपन्न हुई थी। दिनांक 22.12.2024 रविवार को पूर्वाह्न 10:30 बजे से केंद्रीय समिति की दूसरी बैठक अध्यात्म साधना केंद्र, छतरपुर, दिल्ली में संपन्न हुई। इस बैठक में तमिलनाडु, असम, बंगाल, उड़ीसा, बिहार, झारखंड, मालवा, चितौड़, हरियाणा, ब्रज प्रांत, काशी प्रांत, मेरठ प्रांत एवं दिल्ली के प्रमुख अधिकारी एवं कार्यकर्तागण उपस्थित हुए। बैठक में विशेष रूप से माननीय वीरेंद्र शर्मा जी, केंद्रीय संगठन प्रभारी, का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस अवसर पर प्रमुख पदाधिकारियों में वनवासी रक्षा परिवार के केंद्रीय मंत्री श्री श्रीराम अग्रवाल, महिला समिति की कार्याध्यक्षा श्रीमती शशि आजाद, श्री प्रदीप गुप्ता, श्री जितेन्द्र हंस, श्री जगदीश बंसल, श्री विष्णु अग्रवाल, प्रो बसंत कुमार दानी, श्री कैलाश चंद्र जायसवाल, श्री महेन्द्र सिंह राठौर, श्रीमती मंजू नायर, श्री प्रफुल्ल बोरकर सहित विभिन्न विभागों एवं प्रांतों के वरिष्ठ पदाधिकारीगण उपस्थित हुए। व्यापक विचारोपरांत इस बैठक में आगामी वर्ष 2025 के लिए निम्नांकित निर्णय लिए गए –

1. प्रथम सत्र में भारत मण्डपम, दिल्ली में सम्पन्न केन्द्रीय संस्कार परिवार स्नेह–मिलन कार्यक्रम की भव्यता, विशिष्ट अतिथियों की गरिमामय उपस्थिति, आदरणीय भैया जी के अनुकरणीय मार्गदर्शन, पूज्य संत गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज की अमृतमयी वाणी, भारत सरकार के केन्द्रीय मंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी द्वारा आगत अतिथियों का सम्मान तथा प्रतिभा विकास केन्द्र के बच्चों द्वारा प्रस्तुत प्रेरणास्पद एवं मनोहारी रंगमंचीय कार्यक्रम में सराहनीय योगदान करने वाले सभी कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया गया।

2. वनयात्रा की तिथि व स्थान :– प्रति वर्ष होने वाली वनयात्रा आगामी 7, 8 एवं 9 मार्च, 2025 को असम प्रांत उदालगुड़ी एवं उत्तरी लखीमपुर जिला में होगी। इस वनयात्रा में वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के प्रमुख कार्यकर्ता, केन्द्रीय अधिकारीगण एवं रक्षा परिवार के सम्मानित बंधु–भगिनी सम्मिलित होंगे। इसकी विस्तृत सूचना शीघ्र दी जाएगी।

3. आगामी वर्ष 2025 के लिए विस्तार – विकास की योजना :– उपस्थित सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं द्वारा चार समूहों में बैठकर प्रतिभा विकास केन्द्र के विस्तार एवं विकास तथा संस्कार परिवार योजना पर व्यापक विचार विमर्श कर इसका लक्ष्य निर्धारित किया

गया। विस्तार–विकास की योजना निम्नवत् तय हुई :–

क. कुल कार्ययुक्त प्रांत – 16

1. श्री वीरेन्द्र सिंह कौण्डिन्य – 06 प्रांतों का विशेष प्रभार (चितौड़, मालवा, दिल्ली, हरियाणा,मेरठ एवं ब्रज प्रांत) इनमें सभी 06 प्रांत कार्ययुक्त हैं।

2. श्री बलराम सिंह – 03 प्रान्तों का विशेष प्रभार (उत्तर बंग, उत्तरी असम एवं दक्षिण बिहार)। ये तीनों प्रांत कार्ययुक्त हैं।

3. श्री धनंजय सिंह – 05 प्रांतों का विशेष प्रभार (पूर्वी ओडिशा, पश्चिमी ओडिशा, झारखंड, दक्षिणी बंग एवं मध्य बंग)। इनमें 05 प्रांत कार्ययुक्त हैं।

4. श्री वी राघवन जी – 02 प्रांत का प्रभार (उत्तर तमिलनाडु एवं दक्षिण तमिलनाडु)। इनमें सभी 02 प्रांत कार्ययुक्त हैं।

विस्तार हेतु लक्षित प्रांत संख्या–04, प्रांत – (त्रिपुरा, दक्षिणी असम, काशी, छत्तीसगढ़)।

ख. कार्ययुक्त जिलों की संख्यां – 64 विस्तार लक्ष्य – 27

घ. कार्ययुक्त नगर एवं प्रखंड संख्या–64, लक्ष्य–49।

ड०. वर्तमान केन्द्र संख्या – 1032 –,केन्द्र विस्तार का लक्ष्य – 1211।

च. संस्कार परिवार संख्या (प्रतिभा विकास केन्द्र के अभिभावक – 19717 अन्य परिवार– 1597, केन्द्र संचालन समिति परिवार–3482):– 24796

4. सेवाव्रती प्रशिक्षण वर्ग :– विस्तार कार्य की महत्वाकांक्षी योजना के आलोक में बड़ी संख्या में सेवाव्रती कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होगी। अतः सभी प्रांतों से आवश्यकता अनुसार योग्य नये सेवाव्रती तैयार करने की जिम्मेदारी संबंधित कार्य क्षेत्र के प्रमुख दायित्ववान कार्यकर्ताओं को दी गई। इन सभी नवचयनित होने वाले सेवाव्रतियों एवं वर्तमान सेवाव्रतियों का पंचदिवसीय सेवाव्रती प्रशिक्षण वर्ग 21–25 अप्रैल, 2025 को वृंदावन, ब्रज प्रांत (उत्तर प्रदेश) में करना निश्चित हुआ। उपयुक्त वर्ग स्थल का चयन कर श्री गिरिराज किशोर शर्मा जी इसकी सूचना अगले 10 दिनों के अंदर केन्द्रीय कार्यालय को देंगे।

5. त्रिदिवसीय आचार्य प्रशिक्षण वर्ग :– हमारे वर्तमान आचार्यों की गुणवत्ता में निखार लाने तथा विस्तार कार्य में लगने वाले नवीन चयनित आचार्यों को योजनानुकूल योग्य बनाने की दृष्टि से प्रति वर्ष आचार्य प्रशिक्षण वर्ग आयोजित होते हैं। इस बार नवीन एवं वर्तमान दोनों प्रकार के आचार्यों का प्रशिक्षण वर्ग एक साथ करने का निर्णय लिया गया। विभिन्न प्रांतों में प्रशिक्षण वर्ग कब होंगे, कहां होंगे इसकी विस्तृत योजना श्री वीरेन्द्र सिंह कौण्डिन्य जी संबंधित कार्य–क्षेत्र के प्रमुख सेवाव्रती कार्यकर्ता से वार्ता कर तय करेंगे। वर्ग में नवीन आचार्यों की उपस्थिति प्रथम दिन पूर्वाह्न 10:00 बजे तक होगी तथा वर्तमान आचार्यों की उपस्थिति दूसरे दिन सुबह 10:00 बजे तक होगी। सभी आचार्यों का अवकाश एक साथ तीसरे दिन अपराह्न 4:00

बजे तक हो सकेगा।

आचार्य प्रशिक्षण वर्ग एवं सेवाव्रती प्रशिक्षण वर्ग के प्रतिभागिता के लिए रु.100/– प्रति प्रतिभागी पंजीयन शुल्क देय है।

6. केन्द्र विस्तार प्रक्रिया – केन्द्र विस्तार के लिए सेवाव्रती कार्यकर्ता पहले गांवों का चयन करेंगे, वहां गाँव के लोगों की बैठक होगी तथा गाँव के लोगों द्वारा संयोजक तय होंगे, जिसके नियुक्ति की घोषणा संगठन के स्थानीय अधिकारी करेंगे। गाँव के लोग ही आचार्य का नाम चयन हेतु अनुशंसित करेंगे। इनमें योग्य एवं उपयुक्त व्यक्ति को संयोजक द्वारा आचार्य बनाया जाएगा।

7. आचार्य प्रशिक्षण वर्ग – आचार्य प्रशिक्षण वर्ग की तिथियाँ श्री वीरेन्द्र सिंह कौण्डिन्य जी संबंधित क्षेत्र के सेवाव्रतियों से वार्ता कर तय करेंगे।

8. कार्यकर्ताओं के बीच कार्य विभाजन व समन्वय :– कार्य का स्वरुप एवं आवश्यकतानुसार कार्य सुसम्पादनार्थ दो व्यवस्था विभाग एवं इसके प्रमुख की घोषणा की गई।

1. केन्द्र विस्तार, विकास तथा समन्वय विभाग :– इस विभाग के अंतर्गत प्रतिभा विकास केन्द्रों के विस्तार, आचार्य–कार्यकर्ता प्रशिक्षण, छात्रों के शैक्षणिक व संस्कारात्मक विकास तथा विविध प्रतिभाओं के विकास की गतिविधियों को गति देना होगा। इस विभाग के केन्द्रीय संयोजक श्री वीरेन्द्र सिंह कौण्डिन्य होंगे। सह–संयोजक में श्री धनंजय कुमार सिंह, व सहायक श्री अंगद कुमार सिंह, श्री भरत सिंह एवं श्री रतन कुमार रहेंगे।

दिल्ली एनसीआर के संयोजक श्री अंगद कुमार सिंह व सह–संयोजक श्री रतन कुमार होंगे। इनके सहायक श्री सौरभ जी, श्रीमती दिव्या मेहता जी, श्रीमती अल्पना ठाकुर जी, श्रीमती शारदा साठे एवं सुश्री महक कश्यप जी रहेंगी।

2. संस्कार परिवार योजना विभाग :– इसके अंतर्गत संस्कार परिवार योजना का विस्तार,इनका दैनिक एवं मासिक संस्कार गतिविधियों की नियमितता सुनिश्चित करना, परिवारों में संस्कार पक्ष को स्थापित करना तथा संस्कार परिवारों की संख्या बढ़ाना होगा। इस विभाग के केन्द्रीय संयोजक श्री बलराम सिंह होंगे तथा इस कार्य में उचित मार्गदर्शन के लिए वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन का कोई वरिष्ठ अधिकारी प्रभारी के नाते रहेंगे।

समापन सत्र में मा.वीरेन्द्र जी भाई साहब का प्रेरक उद्बोधन प्राप्त हुआ। इन्होंने बताया कि व्यक्ति जीवनपर्यंत सीखता है। कार्यक्षेत्र हमारे लिए सीखने–अनुभव प्राप्त करने का सबसे उपयुक्त अवसर है। यद्यपि इस बार का केन्द्रीय कार्यक्रम कई दृष्टि से स्मरणीय रहा तथापि छोटी–छोटी कमियां भी हमारे कार्य में न रहें, इनसे सीख लेकर श्रेष्ठ कार्यकर्ता बनने का प्रयत्न होना चाहिए। हम सब सेवा के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान कर रहे हैं। हम संगठन के उद्देश्य को ध्यान में रखकर अपना विकास करें,अपने सहयोगियों को साथ लेकर आगे बढ़ें, सफलता

का यही मंत्र है। दृढ़ संकल्प से बड़े उद्देश्यों की पूर्ति होती है। परन्तु संगठित एवं सामूहिक प्रयास से उद्देश्य तो पूर्ण होंगे ही, संगठन भी यशस्वी होगा।

प्रवासी कार्यकर्ता अपना अगले माह का प्रवास तय कर इस माह की अंतिम तिथि तक संगठन के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं कार्यालय को सूचित कर दें, यह उनकी जिम्मेदारी है। सफलता की मंगलकामनाओं एवं कल्याण मंत्र के साथ बैठक की कार्यवाही सम्पन्न हुई।

केन्द्रीय बैठक - अयोध्या 07–09 सितम्बर, 2024

डा0 रुकमणी गुप्ता
संगठन मंत्री
केन्द्रीय महिला समिति

इस वर्ष की 2 दिवसीय केन्द्रीय बैठक अयोध्या धाम में विश्व हिन्दू परिषद् के परिसर कारसेवकपुरम में सम्पन्न हुई। इस बैठक में कुल 283 बन्धु–बहनें सम्मिलित हुए जिसमें पर्याप्त मात्रा में कार्यरत सदस्य भी थे। जिन्हें अधिकतर विभागानुसार, जिलानुसार कुछ न कुछ दायित्व देकर संगठन के दायित्ववान् कार्यकर्ता बनाया। इस बैठक में विशेश रूप से श्रीराम मंदिर ट्रस्ट के सन्त श्री कमलनयनदास जी, विश्व हिन्दू परिशद् के केन्द्रीय सह–संगठन मंत्री श्री मिलिन्द पराण्डे जी, राम मंदिर ट्रस्ट सह–प्रमुख श्री गोपाल जी के सानिध्य, मार्गदर्शन के साथ संगठन के प्रेरेणास्त्रोत संगठन प्रभारी श्री वीरेन्द्र जी का सभी सत्रों में प्रस्तावना प्रस्तुति के द्वारा सत्रों की विशय वस्तु निरूपण के साथ समय–समय पर इस बैठक का लक्ष्य भी बताया। इस बैठक के विभिन्न सत्रों में केन्द्रीय अध्यक्ष श्री मनोज अरोड़ा, केन्द्रीय उपाध्यक्ष श्री मोहन सेठ, श्री श्रीराम अग्रवाल, श्री सुरेन्द्र चावला, युवा विभाग संयोजक श्री दिव्यांशु पाण्डेय, महिला समिति कार्याध्यक्षा श्रीमती शशी आजाद जी के साथ विभिन्न प्रांतों के प्रांत प्रभारी, प्रांत के सेवाव्रती, विभाग प्रभारी, अध्यक्ष, महामंत्री, महिला समिति की बहनें युवा टोली के सदस्यों की उपस्थिति तथा उनके द्वारा लिये गये संकल्पों ने केन्द्रीय बैठक को सफल बनाया।

इस बैठक के सभी सत्रों का संचालन प्रतिभा विकास केन्द्र के केन्द्रीय सह–संयोजक श्री वीरेन्द्र कौण्डिन्य ने किया तथा योग–प्राणायाम का दायित्व श्री रतन कुमार ने संभाला। समय–समय पर संगठन कार्यकर्ताओं ने भी जोशपूर्ण गीतों का वाचल किया।

बैठक के उद्घाटन सत्र में पूज्य संत कमलनयनदास जी, केन्द्रीय उपाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चावला व श्री मोहन सेठ, महिला समिति कार्याध्यक्षा श्रीमती शशी आजाद, एवं संगठन प्रभारी मा0 वीरेन्द्र जी ने मंच को सुशोभित किया। संत स्वागत, प्रार्थना गीत के पश्चात् मा0 वीरेन्द्र जी ने प्रस्तावना में बताया कि श्रीराम की इस शौर्यभूमि अयोध्या में राम मंदिर निर्माण हेतु हिन्दू आंदोलन को सफल बनाने का दायित्व स्वामी जी ने उठाया। रामराज्य की स्थापना के लिये हम इस आंदोलन का आगे बढ़ाते हुए राममंदिर की स्थापना से रामराज्य की ओर बढ़ने हेतु हिन्दू संस्कारों क्रियाकलापों पर चिंतन की दृष्टि ये यह तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन अयोध्या के कारसेवकपुरम् में रखी गई है। **हमें अपने कार्य को यशस्वी बनाने के लिये 3 बिन्दुओं का पालन करना होगा। समय का पालन, सूचनाओं का पालन व अपने कार्य** पर ध्यान रामराज्य के लिए इस केन्द्रीय बैठक में 3 संकल्प लेने है–

1. संस्कार परिवार की संख्या 1 लाख से ऊपर करना।
2. वंचित हिन्दू समाज 40 करोड़ के घर–परिवारों में सनातन परंपरा और शिक्षा पहुंचाने के लिये 25000 प्रतिभा विकास केन्द्र खोलने का प्रयास।
3. रक्षा परिवारों की संख्या बढ़ाना (सामान्य जिलों में 100 तथा विकसित जिलों में) 150 या अधिक रक्षा परिवार बनाना। इनके सहयोग से ही जंगल–पहाड़ों में प्रतिभा विकास केन्द्र का संचालन हो सकेगा।

श्रीमती शशी आजाद ने अपने उद्बोधन में कहा कि सौभाग्य से हमारा श्रीराम मंदिर दर्शन का

सपना पूरा हुआ। इस बैठक के निर्धारित समय में हमारा उत्साह और कार्यक्षमता बढ़ेगी तथा संगठन के प्रति भविष्य के कामों की दिशा भी मिलेगी जिससे नगरीय वंचित समाज तथा जंगड़ पहाड़ के बच्चों को प्रतिभा विकास केन्द्र संचालन द्वारा शिक्षित, संस्कारित कर देश को आगे बढाने का अवसर मिलेगा।

इस सत्र के मुख्य अतिथि सत्र कमलनयन दास जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि रामराज्य की स्थापना भारत का सपना भी है और हमारा संकल्प भी, परन्तु जब तक जंगलराज समाप्त नहीं होगा, रामराज्य की स्थापना असंभव है। भगवान श्रीराम ने दानवों के अन्यायपूर्ण जगलराज का नाश करके वनवासियों के लिये न्यायपूर्ण राज्य की स्थापना की थी। समाज में भेदभाव रहते रामराज्य नहीं आ सकता। समाना, समरसता रामराज्य की पहली शर्त है परन्तु देश की स्वतंत्रता के पश्चात् हिन्दू समर्थक केन्द्रीय सरकार (वर्ष 2014) से पूर्व की सरकारों ने हिन्दुत्व विरोधी मानसिकता के कारण भारत विरोधी बनाकर ईसाई मिशनरी समर्थक विद्यालयों की स्थापना से वनवासियों को ईसाई बनाकर सनातन के लिये संकट और संघर्श उत्पन्न कर दिया तथा हिन्दू मठ–मंदिरों पर अपना कब्जा जमा लिया। मंदिरों से प्राप्त चढ़ावे (धन) से चर्चों और मस्जिदों को सहायता दी जाती है। अब सनातन विरोधी कानूनों को समाप्त कर सनातन संस्कृति के पोशण की नीति संबंधी कानून बनाने होंगे।

इस सत्र में मा0 वीरेन्द्र जी के साथ द्वितीय सत्र युवा विभाग संयोजक श्री दिव्यांशु पाण्डे, श्री सुरेन्द्र चावला जी, उड़ीसा से श्री वसन्त कुमार दानी (अवकाश प्राप्त अभियन्ता), वाराणसी के वासी श्री रामनारायण जी (अयोध्या में नगरीय कार्यक्रम करने के प्रभारी) जी तथा वृंदावन, वाराणसी के प्रभारी श्री गिरिराज किशोर जी मंचासीन रहे।

इस सत्र में मा0 वीरेन्द्र जी ने **संगठन की प्रमुख संस्कार परिवार योजना पर विस्तार** से प्रकाश डालते हुए कहा कि देश में धर्मरक्षा के काम में आने वाली पीढ़ी को सनातनी बनाना वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन का उद्देश्य है इसके लिये हमें अपने परिवार को संस्कार परिवार बनाना है। संस्कार परिवार योजना का काम घर वापसी का काम है। हम निश्चय ही अपने समाज को संस्कारित कर समाज को बंटने से बचाना है। इसके तीन चरण है :–

1. अपने परिवार में कम से कम आधा घंटा देकर संस्कार परिवा बनाना।
2. महीने में एक बार नगरशः जिलाशः संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रम के आयोजन में बच्चों के अपने परिवार के साथ पड़ोसी के लाएं। फिर आगे पड़ोसी अपने पड़ोसी–मित्र को लायें जिससे श्रृंखलाबद्ध तरीके से संस्कार परिवारों का विस्तार होगा। इसी वर्ष के अभी तक 45 कार्यक्रमों में 4000 परिवार सहभागी बने।
3. वर्ष मे एक बार जिलाशः संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रम आयोजन द्वारा अधिकतम परिवारों को जोड़ना जिन्हें संगठन के केन्द्रीय वार्षिक कार्यक्रम में आमंत्रित कर संगठन के कार्यों को दिखाना।

अभी हम 40–50 हजार बच्चों को पढ़ायेंगे परन्तु अधिकाधिक संस्कार परिवार बनाएंगे। इस क्रम में दिल्ली एन. सी. आर में 100 तथा देश के अन्य प्रांतों में 943 प्रतिभा विकास केन्द्र संचालित हो रहे हैं। इन्हें अब 2000 तक तथा संस्कार परिवारों की संख्या 1 लाख तक ले जाने का संकल्प है। इस महत्वाकांक्षी योजना पर अमल की बहुत आवश्यकता है जिसके द्वारा दिल्ली एन.सी.आर में 2 लाख परिवारों को जोड़ना है। मा0 वीरेन्द्र जी ने बताया कि 21 दिसम्बर के केन्द्रीय कार्यक्रम में विश्व हिन्दू परिषद् के

सम्माननीय बंधु आयेंगे तथा उपस्थित बंधुओं को सार्थक उद्बोधन प्राप्त होगा।

श्रीमान सुरेन्द्र चावला जी ने अपने परिवार, अपार्टमेंट में काम करने वालों को अपने से अलग न रखकर समान मानने का आग्रह किया।

तृतीय सत्र :— इस सत्र में पूर्वी विभाग के श्री वेद रुस्तोगी, केन्द्रीय मंत्री श्री श्रीराम अग्रवाल महिला समिति उपाध्यक्षा श्रीमती मधु सेठ (अध्यक्षा) तथा श्री वीरेन्द्र सिंह कौण्डिन्य (केन्द्रीय सह संयोजक प्रतिभा विकास केन्द्र) मंचासीन हुए। श्रीराम अग्रवाल जी ने सत्र की प्रस्तावना में वर्श के अंत तक प्रतिभा विकास केन्द्र खोलने का लक्ष्य बताते हुए सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की आचार्यों द्वारा योग्यता को बाहर निकालने का श्रेय आचार्यों को देते हुए कहा कि ये बच्चे संस्था के विभिन्न कार्यक्रमों में भजन के साथ आसन—प्राणायाम तथा बहुआयामी विकास का उत्तम प्रदर्शन कर रहे हैं। हम इन बच्चों के अभिभावकों को मासिक संस्कार परिवार मिलन ये बुलाकर संस्कार परिवार बना रहे है तथा स्वच्छता, स्वास्थ्य की भी शिक्षा देते हैं।

श्री वीरेन्द्र कौण्डिन्य जी ने बताया कि जागरुकता के अभाव में जंगल—पहाड़ तथा नगरीय, झुग्गी, झोपड़ी वासी को ईसाई मिशनरी तथा मुस्लिम समाज शिक्षा, धन, स्वास्थ्य का लालच देकर लगातार धर्मान्तरित कर रहे हैं। यह संगठन प्रभावित क्षेत्रों में प्रतिभा विकास केन्द्र के संचालन द्वारा संस्कारयुक्त शिक्षा प्रदान कर समाज के लिये उपयोगी बनाने में प्रयत्नशील है जिससे वे बच्चे स्वावलम्बी होकर आत्मविश्वास का जीवन जी सके तथा उनके परिवार भी संस्कारित होकर धर्मान्तरण से बच सकें।

मा0 वीरेन्द्र जी ने बताया कि झुग्गी झोपड़ी तथा वनक्षेत्रों का समाज ही देश की रक्षा पंक्ति है। अतः इनके बच्चों को संस्कारित करना प्राथमिकता है परन्तु नगरीय सम्पन्न अति सम्पन्न परिवारों के बच्चों में भी संस्कारों का अभाव दीख रहा है। हम इन उच्चवर्गीय परिवारों में भी जाएंगे परनतु प्रतिभा विकास केन्द्र रुप में नहीं।

सत्र के अंत में अध्यक्षा श्रीमती मधु सेठ जी ने वंचित समाज के सर्वोत्थान हेतु इस सत्र में श्री अभिषेक मनचन्दा कोलकता केन्द्रीय उपाध्यक्ष श्री मोहन सेठ, केन्द्रीय कोषाध्यक्ष श्री जय किशन जी, मा0 वीरेन्द्र जी मंचासीन हुए।

चतुर्थ सत्र :— मा0 वीरेन्द्र जी ने आर्थिक साधनों की उपलब्धता पर प्रकाश डाला अर्थात् वंचित समाज के प्रति संस्करों की रक्षा के साथ शिक्षा प्रदान करने हेतु प्रतिभा विकास केन्द्र संचालन के लिए धन भी चाहिए। जिसकी पूर्ति होती है जिलाशः तथा केन्द्रीय कार्यक्रम द्वारा। नगरीय बंधुओं को रक्षा परिवार बनाकर अभी तक 50 जिलाशः कार्यक्रम सम्पन्न हुए है। इस बार केन्द्रीय कार्यक्रम में कोई कलाकर नहीं विभिन्न प्रांतों के प्रतिभा विकास केन्द्र के बच्चे ही कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। दिल्ली एन.सी.आर में कुल 95 प्रतिभा विकास केन्द्र चल रहे हैं तथा 25 और प्रतिभा विकास केन्द्र जल्दी ही प्रारंभ हो जाएंगे। वीरेन्द्र जी ने नगरशः चल रहे प्रतिभा विकास केन्द्र का व्हाट्सप ग्रुप बनाने का आग्रह किया।

केन्द्रीय बैठक — दूसरा दिन — प्रथम सत्र — विषय संघ व संघ परिवार

केन्द्रीय बैठक के दूसरे दिन 8 सितम्बर को प्रातःकाल के अभ्यास दैनिक प्रार्थना संस्कार परिवार योजना के अभ्यास (आसन, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार श्वसन—व्यायाम) के बाद प्रथम सत्र में संघ, संघ परिवार विषय की प्रस्तुति एवं मार्गदर्शन के लिये के लिये श्रीमान् गोपाल जी (वरिष्ठ प्रचारक, श्रीराम जन्मभूमि न्यास के सचिव एवं श्री चंपतराय जी के

सहायक) के साथ श्री श्रीराम अग्रवाल, श्री दिग्विजय गुप्ता जी, श्री रमेश बसंल जी, युवा विभाग कार्यकर्ता श्री मंगेश निंभोरकर जी मंचासीन हुए।

श्री गोपाल जी के मार्गदर्शन से सत्र का प्रारंभ हुआ। उन्होंने संघ के प्रति उपस्थित कार्यकर्ताओं के विचार प्राप्त कर अपना विचार रखा। उन्होंने बताया कि हिन्दुओं के एकमात्र देश भारत का नाम भारत ऋषि के नाम पर है। भारत की शंति–समृद्धि अथवा दुर्दशा ही हिन्दुओं की शांति–समृद्धि और दुर्दशा है। संघ निर्माता डा0 केशव बलिराम ने इस पर चिंतन किया कि हिन्दुओं की आत्मविस्मृति के कारण हिन्दु समाज में छुआछूत, प्रांत भेद, भाषा भेद जाति भेद आदि समस्याओं का दुष्प्रिभाव आज भी देख रहे हैं। हम कौन हैं, हमारे पूर्वज कौन है, हमारे इतिहास को सब हिन्दू विस्मृत कर गये। हिन्दु आत्मकेन्दित है, आत्मनिर्भर नहीं। इन समस्याओं को जानकर संघ निर्माता ने आत्मस्मृत, समरस और आत्मनिर्भर समाज बनाने हेतु सर्वप्रथम व्यक्ति निर्माण का कार्य किया। परिणामतः संघनिश्ठ कार्यकर्ताओं ने समाज के सभी क्षेत्रों में सम्पर्क द्वारा समाज के बंधुओं को जोड़ा तथा सामाजिक जीवन के अनुकूल समझ विकसित की। इस प्रकार अनेक संगठन बनते चले गये। इनके बाहर मठ–मंदिरों के संत–महात्मा–पुजारियों से सम्पर्क द्वारा हिन्दू समाज को संस्कारित करने, राष्ट्रभाव जागृत करने का कार्य किया। साथ ही विभिन्न जातियों के प्रमुखों से भी सम्पर्क करने का प्रयास किया। फलतः विश्व हिन्दू परिषद् के द्वारा ईसाई और इस्लाम धर्म स्वीकारने वाले हिन्दु को परिवारों में वापिस लाया गया। अब समाज के समृद्ध वर्ग के बंधुओं से सम्पर्क कर समाज के वंचित वर्ग में सेवाकार्य चलाने का कार्य अनवरत चल रहा है। आज विश्व हिन्दू परिषद् की छत्रछाया में वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन देश के विभिन्न प्रांतों में प्रतिभा विकास केन्द्रों के संचालन द्वारा वनक्षेत्रों तथा नगरीय वंचित समाज को संस्कारित, शिक्षित करने का कार्य कर रहा है। विश्व में चल रहे विमर्श के प्रति भी संघ के द्वारा विभिन्न संगठन सकारात्मक सहयोग द्वारा मानव व प्रकृति के हित में इस विमर्श को मोड़ने का कार्य अनवरत चल रहा है।

सत्र के अन्त में दिग्विजय गुप्ता जी ने इस श्रेष्ठ उद्‌बोधन के लिये आभार व्यक्त किया।

द्वितीय सत्र – बौद्धिक वर्ग :– इस सत्र में लखनऊ क्षेत्र के कार्यकर्ता दादा राजेंद्र जी, सुरेन्द्र चावला की विहिप के केंद्रीय संगठन मंत्री मा0 मिलिन्द पराण्डे जी के सानिध्य में मंचासीन हुए इस सत्र में उपस्थित कार्यकर्ता मा0 पराण्डे जी के प्रभारी उद्‌बोधन से लाभान्वित हुए। महान् विद्वान पराण्डे जी ने कहा कि हम सब हिन्दू संस्कृति के प्रति समर्पित होकर अपने राष्ट्र और समाज के सेवा समर्पण का कार्य कर रहे है। हम केवल जन्म से हिन्दू हैं परन्तु हमारे आचरण में हिन्दुत्व प्रकट नहीं होता। कण–कण में ईश्वर का वास मानकर हम पत्थर, पेड़ नदी पशु–पक्षियों की पूजा करते हैं। परन्तु अपने ही दलित वंचित पिछड़े बन्धुओं से भेदभावपूर्ण व्यवहार कर उनकी उपेक्षा करते हैं। यह आचरण समरस समाज के निर्माण में विकट बाधा है। समाज में इस बुराई को दूर करने व अच्छाई के संस्कार निर्माण की प्रारंभिक पाठशाला परिवार है, जहाँ बच्चा देखकर सुनकर सीखता है अच्छे–बुरे संस्कार प्राप्त करता है परन्तु आज न्यायालयों में अधिकतम केस पारिवारिक विघटन के चल रहे हैं जो परिवार के क्षरण का द्योतक है। इसका प्रमुख कारण विवाह संस्था के प्रति लापरवाही और उसकी पवित्रता का नष्ट होना है जिससे धर्म और संस्कृति नष्ट हो जायगी। इसीलिये **प्रदूशित और विघटित हो रहे परिवार को संभालने में धर्म की महती भूमिका** है। धर्म के 2

रूप है –

1. ईश्वर का स्वरूप क्या है, इसकी उपासना कैसे करें।

2. धर्म का दूसरा स्वरूप है जीवन–मूल्य जिसके धारण करने से जीवन सामंजस्य बैठाते हुए सुख–शंति और समृद्धि प्राप्त कर विकसित होता रहता है। धर्म कभी बदलता नहीं तथा जीवन–मूल्यों की स्थापना करता है। हिन्दू चिंतन में कृतज्ञता की भावना, परोपकार को अपना धर्म मानना, परस्पर समन्वय–संतुलन–तारतम्य का भाव बैठाना ही हमारा धर्म है। संस्कारों से ही संस्कृति बनती है। पुनर्जन्म, आत्मा का अस्तित्व, ओंकार का महत्व ही हिन्दु चिंतन का स्वरुप है। हिन्दु परिवार ही ऐसी संस्था है जहां बच्चों को अधिकार नहीं, कर्त्तव्य सिखाये जाते हैं जहां प्रातःकाल उठने पर, रात्रि सोते समय भोजन से पहले ईश्वर स्मरण होता है। अतः आज बच्चों में जब मोबाइल का दुष्प्रभाव हो रहा है, तब अपने परिवार में 01 घंटे का साप्ताहिक सत्संग आवश्यक हो गया है। यह परिवार सत्संग ही वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के रूप में स्थायी योजना सफल बन रही है।

तृतीय सत्र मुक्त चिंतन :– इस सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय अध्यक्ष श्री मनोज अरोड़ा जी ने की तथा मार्गदर्शन मा0 वीरेंद्र जी का रहा। **श्री मनोज अरोड़ा** ने देश की प्रमुख समस्या धर्मांतरण पर चर्चा करते हुए कहा कि धर्मांतरण के प्रमुख कारण अशिक्षा बेरोजगार तथा जातीय भेदभाव है जिसे हमारा संगठन प्रतिभा विकास केंद्र संचालन द्वारा दूर करने का प्रयास कर रहा है। यह धर्मान्तिरण घर वापसी से निष्क्रिय हो रहा है कोलकाता से आये **अभिषेक जी चूड़ीवाल** ने अपने हिंदूओं को रोजगार का प्रशिक्षण देने की बात कही जिसमें ये विधर्मी लोग हमारे घरों, व्यापारों में न घुस सकें। मा0 वीरेन्द्र जी ने बताया यही हमारे प्रतिभा विकास केन्द्र का लक्ष्य है, यह प्रशिक्षण कार्य भी 1–2 साल में प्रारंभ होगा। 50 वर्ष पूर्व बहुविवाह अपराध नहीं था परंतु अब यह अपराध है। जब तक समाज स्वयं से स्वीकार नहीं करता तब तक कानून भी नहीं चलते, दहेज प्रथा इसका उदाहरण है। धर्म के नाम पर फ्रॉड करने वालों को सजा का प्रावधान होना चाहिए। मंदिरों में भी स्वच्छता प्राथमिकता हो। अब तमिलनाडु में 2000 नीचि जाति के बिंदुओं को पूजा कराने पुजारी बनने का प्रशिक्षण दिया गया है। ये पुजारी अपने समाज को आस्थावान बनाएंगे तथा इससे ऊंच–नीच जाति का भेदभाव भी समाप्त होगा। **डा0 रश्मि शर्मा** (लेक्चरर दिल्ली विश्वविद्यालय) ने अयोध्या में राम मंदिर की तरह दक्षिण तथा अन्य कहीं भी मंदिरों में निःशुल्क दर्शन की व्यवस्था हो जिससे जाति–पाति, ऊंच–नीच का भेदभाव समाप्त हो जो हिंदू धर्म के विघटन का कारण है।

दक्षिणी विभाग **महिला समिति महामंत्री उर्मिला भट्ट जी** ने विभिन्न सम्प्रदायों में बटें हिंदू राधा स्वामी आर्य समाज मूर्तिपूजक सिख, जैन आदि को एक कैसे करें। **मा0 वीरेन्द्र जी ने बताया** कि विहिप यह कार्य करने का प्रयास कर रहा है। संघ की धारणा है कि धैर्यपूर्वक यह प्रयास आप बिना रुके–थके करते रहें, सफल अवश्य होंगे।

संजीव शर्मा (महामंत्री, मध्य विभाग) – हमारे वनवासी भाइयों को आदिवासी न कहें, ऐसा कहना उनें विघटित करने का शडयंत्र है।

सुधीर जी (रोहिणी जिला) – परिवार एकता ही संस्कार का प्रमुख आधार विषय रहा। मानव को परस्पर संबंधों में कर्तव्य–बोध कराने वाली 'परिवार' ही एकमात्र इकाई है। कर्त्तव्य –आधारित जीवन जीने वाला ही हिन्दू है।

श्रीमती सुनीता अग्रवाल मध्य विभाग

अध्यक्ष महिला समिति में जनसंख्या संतुलन को समाप्त करने पर जोर दिया।

समापन सत्र

मा0 वीरेंद्र जी ने अंतिम सत्र में भविष्य में ग्रहण करने योग्य पाथेय बताया कि 'संस्कार परिवार योजना' को पुनर्स्थापन करके अपने कार्य को यशस्वी बनाने का संकल्प पूरा करें।

मानवता ही रक्षा का आधार भारतीय परिवार व उसकी सनातन व्यवस्था है। जीवन में कर्त्तव्य को बताने वाली एकमात्र इकाई 'परिवार' व्यवस्था के आधार पर ही युवा पीढ़ी को जोड़ने मे यशस्वी हो रहे है। इसी के द्वारा हम आने वाली पीढ़ी को संस्कारित, सनातन बना पायेंगे। इस्लाम जगत की ताकत आधार भी मस्जिद नहीं परिवार ही है। उनकी 4 बीवी 25 बच्चे आधा खाकर ही गुजारा कर लेते हैं, यही उनकी ताकत है।

विश्व की सबसे बड़ी ईसाई शक्ति में परिवारिक दृष्टि से तेजी से ह्मस हो रहा है। इसके सामने अगले 10 वर्षों में संकट गहराने वाला है। इसी कारण अमेरिका तथा यूरोपीय देश अब सनातन धर्म को अपनाने को बहुत उत्सुक हैं। सऊदी अरब भी पाश्चात्य प्रभाव से कमजोर होने लगा है बड़ा परिवार न होने से।

भारत में परिवार का क्षरण 1947 के बाद से शुरू हुआ। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के दायित्व को हम पूरा करेंगे, अपने परिवारों को संस्कारित कर हम तेजी से आगे बढ़ेंगे, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम को अपना आदर्श बनाकर।

केंद्रीय अध्यक्ष श्री मनोज अरोड़ा जी ने भी कहा कि यह सत्र सबको उत्साह देने वाला है। अतः हमें नकारात्मक बिन्दुओं को न देखकर अपने बच्चों को संस्कारपूर्ण शिक्षा प्रदान करनी है। हम अपने तन–मन–धन में से जी भी समाज जागरण में लगा सकते हैं, उसे लगायें, एक दो या तीनों। आज कुल 900 प्रतिभा विकास केन्द्र चल रहे हैं तथा 22500 छात्र शिक्षित, संस्कारित हो रहे हैं। हमारा जो भी अधिकतम संभव है उसे हम संगठन को संवर्द्धन में लगायें।

———————×———————

महिला समिति अभ्यास वर्ग – 25 सितम्बर, 2024

25 सितंबर 2024 को केंद्रीय महिला समिति का अभ्यास वर्ग विश्व हिंदू परिषद प्रांगण, आर.के. पुरम नई दिल्ली में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। समिति की बहनों में परिवार व्यवस्था को मजबूत करने में संस्कार परिवार योजना का प्रभावी रूप से प्रयोग कर अपने संबंधी परिवारों तथा मित्र जनों में इस योजना को लागू करने के लक्ष्य से यह वर्ग आयोजित हुआ। इससे समस्त समाज को संस्कारित करने का संदेश जाएगा। इस प्रथम अभ्यास वर्ग में लगभग 40 बहनों की सहभागिता रही। विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय महामंत्री मा0 बजरंग लाल बागड़ा जी ने उपस्थित बहनों का मार्गदर्शन किया।

इस वर्ग का शुभारंभ बहनों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन तथा प्रतिभा विकास केंद्र की निरीक्षिका श्रीमती दिव्या जी ने ओम, गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र के साथ पुरुषार्थ जागरण क्षमा स्तुति – त्रिदेव – नवग्रह स्तुति–भारत वंदना मत्रों का उच्चारण करवाया। संगठन मंत्री डॉ रुक्मणी गुप्ता द्वारा प्राणायाम के अभ्यास करने के साथ समिति बहन श्रीमती रानी ने भजन गायन किया।

मा0 वीरेंद्र जी ने वर्ग की प्रस्तावना में बताया कि वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन का क्या काम है, उसमें बहनों की भूमिका को परस्पर वार्तालाप द्वारा समझाएंगे। वीरेंद्र जी ने समाज बनाने में मां के महत्व को समझाते हुए बताया कि गर्भधारण से लेकर जीवन के अंत तक मां के द्वारा दिए गए संस्कार मानव जीवन को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए कंस और रावण में धन बल बुद्धिबल बाहुबल के होते हुए भी संस्कारों की कमी से उनका सर्वनाश व दुर्गति हुई।

स्वतंत्रता पूर्व बीच के कांलखंड में माताएं–बहनें सुरक्षा के डर से घर में ही रह गई। परिणामस्वरुप बाल–विवाह, पर्दा–प्रथा जैसी कुप्रथाओं ने जन्म लिया। इसी कारण स्वामी विवेकानंद के विदेशों में प्रवचनों से एक बहिन भगिनी विवेदिता बन संस्कारों की सेवा हेतु भारत में आई। अतः फिर से इस देश को महान् बनाने के लिये बहनों को पवित्रता एवं सक्रियता लानी होगी। जो संख्या 'पवित्रता' के स्तर से भ्रमित हो गई है उन्हें सही रास्ते पर लाने में महिलाओं की समाज में महती भूमिका है जिसकी यहां चर्चा अपेक्षित है।

डा. शिवानी, श्रीमती उर्मिला भट्ट, मधु सेठ जी, शशी आजाद जी, निशी गुप्ता जी, नीलम आनन्द जी तथा अन्य उपस्थित बहनों ने भी समाज में साक्षात उपस्थिति से ही संस्कृति के पुनर्जागरण का चिन्तन दिया। वस्तुतः भारतीय संस्कृति में बहनों के साथ भाइयों को भी परिवार – समाज में संस्कार प्रेरित करते है। इसीलिए वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन संगठन ने इसी उद्देश्य से प्रतिभा विकास केन्द्र में बच्चों के परिवारों का भी मासिक संस्कार परिवार मिलन करते हैं। परिवार के वातावरण को संस्कारों की कमी से समाज में लव–जिहाद की समस्या बढ़ रही है।

शब्द–ब्रह्म के बिना परस्पर संस्कार नहीं दिये जा सकते, इसीलिए ऋषियों द्वारा प्रदत्त ओम्, गायत्री, महामृत्यंजय आदि मंत्रों के उच्चारण की योजना बनी। इनके द्वारा मानसिक – शारीरिक – आध्यात्मिक रुप से सशक्त करना ही परिवार में प्रतिदिन संस्कार परिवार मिलन का उद्देश्य है। इस हेतु ही नगरशः, जिलेशः तथा वार्षिक संस्कार परिवार मिलन का आयोजन होता है। संगठन प्रतिभा विकास केन्द्र के माध्यम से ही इन बच्चों के परिवारों से जुड़

रहा है। नगरीय वंचित समाज ही पूरे हिन्दू समाज को सुरक्षित करेगा।

महिला समिति प्रभारी श्रीमती अमिता प्रकाश जी कहा कि माता–पिता के कामकाजी होने से एकल परिवार में बच्चे संस्कारित नहीं हो पाते, संयुक्त परिवार में हर बच्चे परिवारिक सदस्यों से सारे काम सीखते है।

द्वितीय सत्र :– इस सत्र में भी वन्दना, गीत, गायन के पश्चात् मुक्त चिंतन सत्र में मंच पर श्रीमती शशी आजाद, मधु सेठ जी मा0 वीरेन्द्र जी ने उपस्थिति दी। इस मुक्त चिंतन सत्र में सभी बहनों ने एक श्रृंखलाबद्ध होकर अन्य बहनों को संगठन से जोड़ने तथा पेड़ के पतों का अपनी जड़ों से जुड़े रहने के समान अपनी सभ्यता संस्कृति से जुड़े रहने के लिये सदस्यों का परिवार से जुड़े रहने पर जोर दिया।

अन्तिम सत्र :– भोजनोपरान्त अंतिम सत्र में श्रीमती शशी आजाद ने उपस्थित बहनों को महिला समिति की कार्य योजना का संकल्प दिनाने हेतु 'संग बैठे तीन पीड़ियॉ, चढ़ें विश्व की सारी सीढ़ियाँ' इस उत्साहपूर्ण वाक्य से शुरुआत कर कहा कि हमें समाज को संस्कारित शिक्षित करने हेतु संस्कार परिवार योजना का परिवार जनों के साथ नियमित रुप से निभाते हुए पुत्री के साथ पुत्रों को भी संस्कारित करना है। समाज में जाने हेतु इन 24 घंटों का उत्तम संयोजन करें। समय–समय पर प्रतिभा विकास केन्द्र के बच्चों के परिवारों के भी सुख–दुख के साथी बनें तथा सभी बहनें कभी–कभी अपने जानकारों को लेकर समीप के प्रतिभा विकास केन्द्र का भ्रमण करें जिससे बच्चों में उत्साह का संचार होगा।

मा0 वीरेन्द्र जी ने प्रत्येक नगर–जिले के कार्यक्रमों में आगत बहनों को बाद में सम्पर्क द्वारा महिला समिति से जोड़ने का सुझाव दिया। श्रीमती अनिता चावला (उत्तरी) ने अपनी प्रथम वनयात्रा का सुखद अनुभव सुनाया।

सत्र के समापन में विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा जी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि इस संगठन की बहनों का गृहस्थ में रहते हुए भी संगठन से जुड़ना प्रशंसनीय है।

प्रतिभा विकास केन्द्रों का संचालन तथा महिलाओं की सक्रियता वास्तव में हिन्दू धर्म रक्षा का ही काम है। जब ये बच्चे तथा युवतियाँ संस्कारित होगी तभी लव जिहाज, धर्मान्तरण सकेगा।

आप सब बहनें व्यक्तिगत रूप से संकल्प लें कि अपने दायित्व निर्वहण के साथ नये सदस्य जोड़ने तथा कार्यकर्ता निर्माण करना प्रत्येक माह का लक्ष्य रखें। अन्त में श्रीमती प्रोमिला ओबराय जी ने समस्त आगतों का धन्यवाद किया।

श्रीहनुमच्चरितम् (क्रमश................)

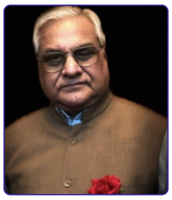

आर्य रविदेव गुप्ता
अध्यक्ष–दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल
चेयरमैन–हिन्द पुनरूत्थान संघ ट्रस्ट

सम्पूर्ण हिन्दु समाज के आराध्य हनुमान जी मेरे हृदय में एक महाशक्तिशाली, ज्ञानवान्, अंजनी–पवन के पुत्र श्रीरामदूत के रुप में एक महामानव के रूप में विद्यमान हैं। इसी भाव से अभिभूत होकर बाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस तथा हनुमान चालीसा के गहन अध्ययन के बाद मुझे अनुभव हुआ कि इतना सर्वगुण सन्पन्न रामसेवक कोई मनुष्येतर प्राणी (बन्दर) नहीं हो सकता।

अपने इसी विचार को मैंने समय–समय पर श्रद्वालु समाज के समक्ष व्याव्यान रूप में प्रस्तुत किया। कोरोना काल में संयोग से ऑनलाइन माध्यम से भारत के अतिरिक्त जब इटली, जर्मनी, लेबनान, इंगलैंड व अमेरिका के प्रवासी भारतीयों ने अपने आराध्य ज्ञानगुण सागर–अतुलित बलधाम हनुमान जी के वास्तविक स्वरूप को सुना तो उन्होंने मुझसे इस तथ्य को एक पुस्तक के रूप में लिपिबद्ध कर समस्त विश्व के समक्ष रखने हेतु प्रस्तुत करने का अनुरोध किया।

इसी के परिणामस्वरूप 10 अध्यायों में 'श्रीहनुमच्चरितम्' पुस्तक लिखित रूप में प्रस्तुत कर पाया हूँ। आप सब प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष पुस्तक का प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ व पंचम अध्याय इस 'वनांचल की पाती' में पूर्व में प्रस्तुत किये जा चुके हैं। इस अंक में उसी का षष्ठ (छठा) अध्याय यहाँ प्रस्तुत है।

षष्ठ अध्याय - वानर जाति एवं हनुमान का स्वरूप-दर्शन

क्या वानर पाति के हनुमान जी को बन्दर कहना उचित है ?– एक शोध

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीरामचन्द्र के पश्चात् रामायण में परम बलशाली महावीर हनुमान का ही स्मरण किया जाता है। हनुमान जी के चित्र व मूर्ति में उन्हें बन्दर के रूप में दिखाया जाता है, जिनकी पूँछ भी है।

आइये, हम पूर्वाग्रहों को छोड़कर प्रमाणों के आधार पर स्वयं विश्लेषण करें कि क्या वास्तव में हनुमान जी ऐसे ही थे?

वानर जाति

प्रारंभ के दो अध्यायों में हमने 'वानर' शब्द का अर्थ '**वन में रहने वाले नर** के रूप में किया था। जैसे गिरि (पर्वत) में रहने वाले को गिरिजन कहते हैं, उसी प्रकार वन में फल, वनस्पति आदि पर निर्भर निराभिष भोजी मनुष्य जाति को 'वानर' कहते हैं। 'वानर' शब्द से यह अवश्य बोध होता है कि यह जाति वानरों (बंदर) के समान चपल, गतिमान व

'गति–गंध–नयो' होगी। इस विषय में निम्न प्रमाण दृष्टव्य हैं–

मानवीय लक्षण

1. मानवीय आकृति

❖ वानर वंश के सभी पात्र मनुष्यों के समान दो पैरों पर ही खड़े होकर चलते हैं, पशुओं के समान चार पैरों पर नहीं।

वानरजाति की उपजातियां

❖ वानर वंश को 'हरिगण' भी कहा जाता था जिसकी अनेक उपशाखाएं राज्य में ही फैली हुई थीं। अकेले किष्किंधा राज्य में ही इनकी ग्यारह शाखाओं का उल्लेख है जिसमें :– वानर, ऋक्ष, व्याध्र, नील व गृद्ध आदि प्रमुखता से चर्चा में हैं।

❖ सुग्रीव के आह्वान पर राम–रावण युद्ध में सहयोग करने के लिये 20–25 वानर वंश उपस्थित हुए थे जिनमें नल व नील नामक अभियन्ता भी थे।

2. नाम संबोधन

हनुमान जी की माता का नाम अंजनी तथा पिता का नाम पवन था। हम विचार करें कि पशुओं के नाम नहीं होते यथा केसरी, पवन, अंजनी, बाली, सुग्रीव, अंगद, हनुमान तारा, रूमा, वैद्य सुषेण आदि।

3. स्त्रियों का मानव स्वरूप

❖ हमारे चित्रकार बाली व सुग्रीव आदि को पशु रूप दिखाते हैं, परन्तु उनकी पत्नियाँ मनुष्य जाति की स्त्रियाँ ही दिखाई गईं, मनुष्य जाति की पत्नियों के पति भी निश्चित रूप से मनुष्य ही होंगे और हनुमान जी उसी वानर जाति के शासक के महामंत्री थे, तो हनुमान जी भी मनुष्य सिद्ध हुए।

❖ सुग्रीव की पत्नी रूमा अत्यन्त रूपवती बताई गई हैं व वानर राजवंश की सभी स्त्रियां ''भूषणोत्तम भूषिताः'' बताई गई हैं। किसी भी वानर स्त्री के पूंछ का कहीं उल्लेख नहीं मिलता।

सुशिक्षित स्त्रियाँ

❖ श्रीराम द्वारा बाली–वध के समय जीवन के अंतिम क्षणों में बाली ने अपनी पत्नी तारा के लिए सुग्रीव आदि से कहा था,'' सुषेण की पुत्री यह तारा सूक्ष्म विषयों के निर्णय करने तथा नाना प्रकार के उत्पातों के चिन्हों को समझने में निपुण है। जिस कार्य को अच्छा बताये उस कार्य को सन्देहरहित होकर करना। तारा की किसी सम्मति का परिणाम अन्यथा नहीं होता।''

किष्किधा काड़ 22. 13

4. मानवीय व्यवहार

❖ यदि कोई बच्चा भीड़ में कहीं खो जाये तो क्या एक पशु उस बच्चे का फोटो देखकर भीड़ में से बच्चे को ढूंढ कर ले आयेगा? परन्तु हनुमान जी सीता जी को ढूंढकर मुद्रिका एवं चूड़ामणि का आदान–प्रदान कर उनकी खबर लेकर आये। क्या एक मनुष्येतर प्राणी ऐसा महान् काम कर सकता है ? निश्चित रूप से नहीं।

❖ अपने महाराज सुग्रीव के आदेश पर हनुमान राम व लक्ष्मण से भेंट करने विप्र वेश धारण कर गये थे। क्या मनुष्य के अतिरिक्त अन्य किसी के लिये यह संभव है?

5. शूरवीर योद्धा

सम्राट बाली, सुग्रीव, हनुमान जी, अंगद एवं सेना आदि सभी शूरवीर योद्धा थे। तभी वे रावण जैसे महाबली राक्षस तथा उसकी सेना को मारने में सहायक होकर लंका–विजय में सफल हो सके।

6. विश्वसनीयता

अत्यंत ही प्रबल प्रमाण हमें मिलता है सीता के

व्यवहार से, जब वह रावण के विमान में असहाय अवस्था में क्रन्दन करती जा रही है व अपने आभूषण वस्त्र में बांध कर नीचे फेंक देती है। क्या देखकर फेंकती है ? उस भयंकर विपत्ति की अवस्था तुलसीदास जी लिखते है:–

''मंत्रिन्ह सहित इहां एक बारा।
बैठ रहेऊं मैं करत बिचारा।।''

4.2

''राम राम हा राम पुकारी ।
हमहि देखी दीन्हेउ पट डारी।।''

रामचरितमानस कष्किन्धाकांड 4.3

पाठकों! हृदय पर हाथ रखकर विचार करें कि महान बुद्धिमति सीता क्या वन्य पशुओं को देखकर अपने वस्त्राभूषण फेंक सकती थी? स्वयं सुग्रीव कह रहे है कि एक बार जब मैं मन्त्रियों के साथ बैठकर यहाँ विचार कर रहा था तभी हमने देखा कि विलाप करती जाती स्त्री ने हमें देखकर ''राम–हा–राम'' पुकार कर आभूषण की पोटली गिरा दी थी।

7. शास्त्रों के ज्ञाता

❖ किष्किन्धा कांड में ऋष्यमूक पर्वत पर जब श्रीराम की हनुमान जी से भेंट हुई तब दोनों में परस्पर बातचीत के पश्चात् रामचन्द्र जी ने लक्ष्मण को हनुमान के विषय में सम्मति देते हुए कहा –

''नानृग्वेद विनीतस्य ना यजुर्वेद धारिणः।
ना सामवेद विदुषः शक्यमेवं प्रभाषितुम्।।

3.28

नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहु व्याहरतानेन न किंचिदपशब्दितम्।।''

वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धाकांड 3.29

अर्थात् ''ऋग्वेद के अध्ययन से अनभिज्ञ और यजुर्वेद का जिसको बोध नहीं हैं तथा जिसने सामवेद का अध्ययन नहीं किया है वह व्यक्ति इस प्रकार परिष्कृत बातें नहीं कर सकता। निश्चय ही इन्होंने सम्पूर्ण व्याकरण का अनेक बार अध्ययन किया हैं, क्योंकि इतने समय तक बोलने में इन्होंने किसी भी अशुद्ध शब्द का उच्चारण नहीं किया है। संस्कार सम्पन्न शास्त्रीय पद्धति से उच्चारण की हुई इनकी वाणी हृदय को हर्षित कर देती है।''

इस उद्धरण के बाद हम सोचें कि क्या मनुष्य के अतिरिक्त कोई प्राणी ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा संस्कृत व्याकरण का अध्ययन कर सकता है?

इसी प्रकार 'वाल्मीकि रामायण' में सुन्दरकांड में हनुमान अशोक वाटिका में राक्षसियों के बीच में बैठी हुई सीता को अपना परिचय देने से पहले सोचते हैं–

''यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम्,
रावण मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति।।

30.18

अवश्यमेव वक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवत्
मया सान्त्वयितुं शक्या नान्यथेयमनिन्दिता।।''

वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकांड 30.19

अर्थात ''यदि द्विज (ब्राह्मण – क्षत्रिय – वैश्य) के समान परिमार्जित संस्कृत भाषा का प्रयोग करूंगा तो सीता मुझे रावण समझकर भयभीत हो जायेगी और कोलाहल मचा देंगी। इसलिये मैं सामान्य नागरिक के समान प्रचलित भाषा का प्रयोग करूंगा।''

निश्चय ही एक मनुष्य ही एकाधिक भाषाओं का ज्ञाता हो सकता है।

❖ 'हनुमान चालीसा' की सम्पूर्ण 40 चौपाइयों में हनुमान जी के अगणित गुणों **''ज्ञानगुनसागर, अतुलित–बलधाम, रामदूत, विक्रम बजरंगी,**

तेजप्रताप, महाजगवंदन, विद्यावान'' का वर्णन है जो एक महान् पुरूष के ही गुण हो सकते हैं।

8. संस्कार सम्पन्न

❖ वाली के अंतिम संस्कार के समय सुग्रीव ने कहा, 'मेरे ज्येष्ठ आर्य बंधु का संस्कार राज्य के नियमानुसार शास्त्र के अनुकूल किया जाय।''

❖ इसी प्रकार बाली–वध के पश्चात् सुग्रीव का राज्याभिषेक भी हवन व मन्त्रों के उच्चारण से सम्पन्न हुआ।

❖ **'श्रीहनुमानचालीसा'** में तुलसीदास जी हनुमान जी के व्यक्तित्व के विषय में कहते हैं,

''हाथ वज्र और ध्वजा विराजे।
कांधे मूंज जनेऊ साजे।।''

अर्थात ''हनुमान जी के कंधे पर मूंज का जनेऊ (यज्ञोपवीत) था, उनके एक हाथ में वज्र (गदा) और दूसरे हाथ में ध्वज रहता था।''

यह संशय–रहित सिद्ध है कि मनुष्य के कंधे पर ही जनेऊ, हाथ में गदा और ध्वज हो सकता है।

❖ स्वयं सुग्रीव श्रीराम को अपना परिचय देते हुए कहते हैं कि हमारी वंश परम्परा के अनुसार मेरा बड़ा भाई वाली ही राज्य सिंहासन पर प्रतिष्ठित है।

9. व्यवहार एवं नीति–कुशल

❖ वाली के पुत्र अंगद का तो बाल्मीकि रामायण में विश्व के श्रेष्ठ महापुरूष के रूप में वर्णन हुआ है। हनुमान जी अंगद को अष्टांग बुद्धि से सम्पन्न, चार प्रकार के बल से युक्त एवं राजनीति के 14 गुणों से युक्त मानते थे।

किष्किन्धा 54/2

❖ **बुद्धि के आठ अंग हैं**–

सुनने की इच्छा, सुनना, सुनकर ग्रहण करना, ग्रहण करके धारण करना, ऊहापोह करना, अर्थ को ठीक से समझना, मनन करना
तत्त्वज्ञान से सम्पन्न होना।

❖ **इसी प्रकार 4 प्रकार के बल हैं**– साम, दाम, दण्ड, भेद।

कुछ विद्वानों के मत में बाहुबल, मनोबल, उपायबल तथा बंधुबल– ये चार प्रकार के बल हैं।

राजनीति के 14 गुण हैं– देशकाल का ज्ञान, दृढ़ता, कष्ट–सहिष्णुता, सर्वविज्ञानता, दक्षता, उत्साह, मंत्रगुप्ति, एकवाक्यता, शूरता, भक्तिज्ञान, कृतज्ञता, शरणागत–वत्सलता, गंभीरता, अधर्म के प्रति क्रोध।

इतने गुणों को धारण करने वाला युवराज अंगद निश्चय ही एक श्रेष्ठ राजपुत्र था।

❖ सीता की खोज में भटकते हुए श्रीराम व लक्ष्मण का राक्षस कबन्ध से सामना हुआ था। उसी ने मरते समय उन्हें सुग्रीव का परिचय देकर उससे मैत्री करने का परामर्श दिया था, चूंकि वह भी समान विपत्ति से ग्रस्त था।

''श्रूयतां राम वक्ष्यामि सुग्रीवो नाम वानरः।
भ्राता निरस्तः क्रुद्धेन वालिना शक्रसूनुना।।''

वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धाकांड 37. 39

''हे राम सुनो! सुग्रीव नाम का एक वानर है। उसके भाई बाली ने क्रुद्ध होकर, उसे अपमानपूर्वक राज्य से निकाल दिया है।''

''वानरेन्द्रो महावीर्यस्तेजोवानमित प्रभः।
सत्यसन्धो विनीतश्च धृतिमान् मतिमान् महान।।''

वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धाकांड 37.41

''वह वानरों का राजा सुग्रीव अत्यन्त बलशाली, तेजस्वी, अमित प्रतापी, सत्यप्रतिज्ञ, विनीत, धैर्यवान व बड़ा बुद्धिमान है।''

मरणासन्न राक्षस कबंध का परामर्श सुनकर एवं,

आश्वस्त होकर श्रीराम तत्काल लक्ष्मण से निम्न शब्दों द्वारा सुग्रीव के पास चलने के लिये कहते हैं

''यस्मिन् वसति धर्मात्मा सुग्रीवो सुमतः सुतः।
नित्यं वालिभयात् त्रस्तश्चतुर्भिः सह वानरैः।।''

38.15

वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धाकांड

अर्थात, आओ, लक्ष्मण, हम वहां चलते हैं जहां राजर्षिपुत्र धर्मात्मा सुग्रीव, बाली के भय से, अपने चार मन्त्रियों के साथ निवास करते है।

पाठकों, हम तनिक विचार करें कि ऐसे श्रेष्ठ गुणों से युक्त वानर जाति के बारे में हम अपनी असावधानी से कितना अन्याय करते हैं।

जब सुग्रीव को लक्ष्मण के सामने आने का साहस नहीं होता तो हनुमान जी ही उनको शांत करने हेतु वाली की पत्नी तारा को साथ लेकर लक्ष्मण जी को मिलते हैंः–

''तारा सहित जाइ हनुमाना।
चरन बंदौ प्रभु सुजस बखाना।।

19. 2

रामचरितमानस किष्किन्धाकांड

❖ पुनः कुछ समय बाद लक्ष्मण जी क्रोधित होकर सुग्रीव को चेतावनी देने जाते हैं तो तुलसीदास जी हनुमान जी की व्यवहार कुशलता की पुष्टि इस प्रकार करते हैंः–

''करि विनती मंदिर लै आए।
चरन पखारि पलंग बैठाए।।''

19.3

रामचरितमानस किष्किन्धाकांड,

❖ ऋक्ष जाति के जामवंत अत्यंत ही बुद्धिमान व नीति कुशल थे और इनकी रामायण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका दिखती है।

❖ इस वानर जाति के लिये बाल्मीकि रामायण में

- **1080 बार 'वानर' शब्द, 420 बार 'कपि' शब्द व 240 बार 'प्लवग' आदि** गुणवाचक शब्दों का प्रयोग हुआ है **जो उनकी विशेष कार्य–कुशलता के सूचक हैं।**

10. किष्किन्धा राज्य की भव्यता

❖ सुग्रीव के राज्याभिषेक के लिये लक्ष्मण जी किष्किंधा नगरी में प्रविष्ट हुए तो उस नगरी की भव्यता की अनेक प्रकार से चर्चा हुई है।

''हृष्टपुष्ट जनाकीर्णा पताका ध्वज शोभिता।
बभूव नगरी रम्या किष्किन्धा गिरिगह्वरे।।''

20.21

वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धाकांड

हृष्टपुष्ट जनों से परिपूर्ण, ध्वजा व पताकाओं से अलंकृत, पर्वतों से घिरी किष्किन्धा नगरी अत्यन्त शोभायमान हो रही थी।

अन्य वन्य जातियाँ

गृद्धकूट के जटायु

हनुमान जी जिस प्रकार पशु नहीं थे उसी प्रकार **जटायु** भी गिद्ध नामक पक्षी नहीं थे। वानर वंश के अध्याय में हम बता चुके हैं कि वन में हरिगण अथवा हरिवंश के नाम से विख्यात वानर, ऋक्ष, व्याघ्र, नील, गिद्ध आदि अनेक प्रकार की मनुष्य जातियाँ निवास कर रही थी। जब रावण सीता का हरण कर आकाश मार्ग से जा रहा था तब गृद्धकूट के गृद्धराज जटायु को देखकर सीता ने अपनी सहायता के लिये उनको ''आर्य एवं द्विज'' कहकर संबोधित किया। ये शब्द पक्षु–पक्षी के सम्बोधन में नहीं कहे जाते। जटायु ने भी रावण को अपना परिचय देते हुए स्वयं को गृद्धकूट पर्वत का भूतपूर्व राजा बताया था

''जटायुः नाम्ना अहं गृध्रु राजो महाबलः''

वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड 50. 4

अतः यह सिद्ध होता है कि जटायु पक्षी नहीं अपितु वीर योद्धा मनुष्य थे जो वृद्धावस्था में जंगल में रह रहे थे।

ऋक्षराज जाम्बवंत

इसी प्रकार 'लंकाकाण्ड' में लक्ष्मण–मेघनाद युद्ध में लक्ष्मण जब घायल हो गये थे तब **ऋक्षराज जाम्बवंत** ने ही हनुमान को संजीवनी औषधि लाने की तरकीब सुझाई थी। युद्ध के समय किसी बुद्धिमान् व्यक्ति से ही सलाह ली जाती है, पशु–पक्षी बन्दर, भालू आदि से नहीं।

महाभारत एवं परवर्ती काल में भी उल्लेख :–

महाभारत ग्रंथ में इन जनजातियों की चर्चा देखने को मिलती है, यथा

- **'आदि पर्व'** में वानर किन्नर, यक्ष एव राक्षस आदि जातियों का उल्लेख हैं।

- **'सभा पर्व'** में भी यह पढने को मिलता है कि पांडवों ने चारों भाइयों को राजसूय यज्ञ के अन्तर्गत सब दिशाओं में दिग्विजय के लिये भेजा था। सहदेव दक्षिण की ओर गये थे और वहां अन्य राज्यों के अतिरिक्त किष्किंधा में वानर राज्य को भी विजय किया था।

आज भी राजस्थान व पंजाब में जाट समुदाय में वानर अथवा **''बांदर गोत्र''** पाया जाता है।

श्रेष्ठ पुरूषों द्वारा अनुमोदन

- अनुसूचित जनजाति आयोग (NCST) के अध्यक्ष **श्री नंद कुमार साई भी अनुमोदन** करते हैं कि :–
''वानर, गृद्ध व ऋक्ष आदि जनजातियों ने ही श्रीराम का रावण से युद्ध करने में सहयोग किया था।''

- **गोरक्षनाथ पीठ के पीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने भी अलवर के मालावेड़ा में एक सभा में कहा था कि :–**

''बजरंगबली एक ऐसे लोक देवता हैं जो स्वयं वनवासी हैं, गिरिवासी हैं। लोग सोचते हैं कि भगवान राम की सेना में वानर, भालू, गिद्ध थे। ओरांव आदिवासी जाति से संबद्ध लोगों द्वारा बोली जाने वाली कुरूख भाषा में गोत्र 'टिग्गा' का अर्थ वानर होता है।
कंवार आदिवासियों में, जिनसे मेरा संबंध है, 'हनुमान' नामक एक गोत्र है।

इसी प्रकार 'गिद्ध' कई अनुसूचित जनजातियों में एक गोत्र है। अतएव मेरा मानना है कि हनुमान आदिवासी समुदाय से थे और उन्होंने राम–रावण युद्ध में भगवान राम का साथ दिया।''

———————×———————

चितौड़ की जीवन गाथा सब के लिये प्रेरक है।

वीरेन्द्र कौण्डिन्य
केन्द्रीय सह–संयोजक
प्रतिभा विकास केन्द्र

मेवाड़ की राजधानी चितौड़ से भला कौन परिचित नहीं होगा। यह वही चितौड़ जिसके आन–बान व शान की रक्षा के लिए भारत के महान सपूत महाराणा प्रताप ने जंगलों में रहकर घास की रोटियाँ खाना स्वीकार किया, परन्तु मुगल बादशाह अकबर की अधीनता कभी स्वीकार नहीं की। यह वही प्रदेश है जहाँ के भील सरदारों ने महाराणा प्रताप के नेतृत्व में अकबर के सेनापति मानसिंह और उसकी सेना के छक्के छुड़ा दिए थे। आज भी यह वन प्रदेश राजस्थान के शासकीय राज्य का भील बाहुल्य जनपद है। यह चितौड़ प्रांत के नाम से जाना जाता है।

अपने उस चितौड़ प्रांत के पर्वतीय क्षेत्र में चितौड़गढ़, उदयपुर, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, शिरोही, बाड़मेर, पाली राजसमंद, आलावाड़ा आदि जिले आते है। यह पूरा क्षेत्र घने वन, पर्वत श्रृंखलााओं से आच्छादित तथा सुन्दर एवं सुरम्य प्राकृतिक छटाओं से सहसा सबको आकर्षित करता है। चितौड़ का ऐतिहासिक किला, हल्दीघाटी की युद्धभूमि, उदयपुर की सुन्दर झीलें पर्यटकों के लिए श्रद्धा–विश्वास तथा राष्ट्रभक्ति जागरण के केन्द्र हैं। यह पूरा प्रदेश भील जाति के अपने वन–बंधुओं की बाहुल्यता का प्रांत है। यह एक दुर्योग है कि यहाँ के मुख्य निवासी भील समुदाय आज भी शिक्षा व विकास की दृष्टि से बहुत पीछे हैं। इनकी अशिक्षा, गरीबी तथा सरल–सहज स्वभाव का लाभ उठाकर उस क्षेत्र में ईसाई मिशनरियाँ व मदरसों ने लोभ – लालच, छल–प्रपंच से भोले भाले भील समाज को राष्ट्र की मुख्यधारा से तोड़ने का दुष्चक्र लम्बे समय से चला रहे हैं। इस वन–प्रदेश का सरल ह्दयी भील समाज उनके माया–जाल में न फंसे तथा जो भूलवश उनके चंगुल में फंस गए हैं उन्हें उनके मायाफांस से निकालकर राष्ट्र की मुख्य धारा में लाना, सनातन संस्कृति व संस्कारों से जोड़ते हुए उनके शैक्षणिक आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक विकास की महती आवश्वकता है। सौभाग्य से वहाँ का सम्पूर्ण भील समाज सनातन संस्कृति का परम अनुरागी है। वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के तत्वावधान में आज बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूँगरपुर एवं उदयपुर के सुदूर वनवासी गाँवों में अपने 248 प्रतिभा विकास केन्द्रों के माध्यम से वनवासी वंचित समाज के बच्चों में ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा के साथ–साथ सनातन संस्कृति के प्रति श्रद्धा भाव जगाने तथा उन्हें सद्संस्कारों से युक्त कर स्वावलंबी, स्वाभिमानी एवं राष्ट्रभक्त नागरिक बनाने के लिए

बड़ा अभियान चला रहा है।

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के द्वारा आज बॉसवाड़ा जिले के कुल 12 प्रखण्ड में से 07 प्रखण्ड़ों के प्रतापगढ़ के कुल 8 प्रखण्ड़ों में से 6 प्रखण्ड़ों में कार्य है। डूगंरपुर के कुल 9 प्रखण्ड़ों में से 04 तथा उदयपुर जिला के कुल 6 प्रखंड़ों में से 4 प्रखण्ड़ों में कार्य कुल 248 केन्द्र के माध्यम से उस अत्यंत पिछड़े प्रदेश के वंचित परिवारों को शिक्षित, संस्कारित, स्वाभिमानी, स्वावलंबी तथा राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत कर सुरक्षित भारत बनाने की दिशा में निरंतन प्रयत्नशील है।

सौभाग्य में भगवान श्रीराम की सेवा में रत रहने वाला, महाराणा प्रताप के राष्ट्रीय स्वाभिमान तथा विदेशी आक्रांताओं से युद्ध में अपना सम्पूर्ण योगदान करने वाले भील समाज के बीच वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के कार्य को गति देने तथा प्रतिभा विकास केन्द्र के माध्यम से सम्पूर्ण चितौड़ प्रांत में राष्ट्र की नवचेतना जगाने के एक छोटा सा उपकरण के रूप में मुझे भी अवसर मिला है। दिनांक 06.08.2024 से 15.08.2024 तक इन चारों जिलों में चल रहे प्रतिभा विकास केन्द्रों में से कुल 15 केन्द्रों की गतिविधियों का प्रत्यक्ष अवलोकन करने का अवसर मिला। इस बीच कुल 12 स्थानों पर आचार्यों एवं केन्द्र संचालन समिति के सदस्यों के साथ बैठकें हुईं। इन बैठकों में कुल 224 आचार्यों एवं 101 समिति सदस्यों के साथ प्रत्यक्ष वार्ता किया। सौभाग्य से रात्रि विश्राम का अवसर 08 परिवारों में हुआ। यह मेरे जीवन के लिए एक प्रेरेणास्पद पक्ष था।

10 दिनों के आवासीय प्रवास में यह अनुभव हुआ कि यहाँ का वनवासी समाज शिक्षा व धन के क्षेत्र में भले ही किन्हीं कारणों से पिछड़े गए हों तथापि ह्रदय की सरलता, आतिथ्य भावना, सनातन संस्कृति से प्रति अनुराग तथा राष्ट्रीय

स्वाभिमान के प्रति अत्यंत गंभीर जागरुकता किसी से कम नहीं हैं। वाणी का माधुर्य, स्वभाव की सहजता, व्यवहार में निश्छलता, कार्य के प्रति गंभीरता तथा सत्यवादिता इनके जीवन की अभिन्न पहचान देखने को मिली। यही सरल–सहज स्वभाव सहसा किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

भोजन, रहन–सहन, वेश–भूषा पूर्णतः सनातन संस्कृति को प्रकट करने वाला मैंने घर–घर में देखा। अपने दैनंदिन जीवन के घोर अभाव को भी अतिथियों के सम्मुख प्रकट नहीं होने देते, यह उनके स्वाभिमान को दर्शाता है। गाँव छोटे–छोटे हैं तथा घर भी एक–दूसरे से दूरी पर तथापि आपस का सहयोग व समन्वय बहुत ही प्रेरणदायी दिखा। घरों के अंदर प्रवेश पूर्व पदवेश बाहर सजाकर रखना, आगमन पर सर्वप्रथम शीतलजल से अतिथि स्वागत तथा भोजन में सादगी वहाँ की पहचान दिखी। हालांकि एक अनोखी बात यह है कि लोग तीखा खाना ज्यादा पसंद करते हैं तथापि वाणी में मिठास उन्हें ईश्वरीय देन है। अधिकांश घर तो बहुत ही सामान्य बने दिखे, परन्तु स्वच्छता एवं आध्यात्मिकता जन–जन के पोर–पोर में दिखी। यही कारण है कि बीमारियाँ कम होती हैं तथा संयोगवश कोई बीमार हुआ तो घरेलु एवं प्राकृतिक चिकित्सा ही उनके निर्मूलन के लिए पर्याप्त है। रास्ते टेढ़े–मेढ़े तथा पहाड़ी क्षेत्र होने

के कारण काफी ऊपर– नीचे होते हैं परन्तु वहाँ के लोगों का दिल उतना ही स्वच्छ, पवित्र, निर्मल तथा सरल–सरपट दिखा।

मैं दिल्ली से रेल मार्ग द्वारा रतलाम जं. होकर सड़कमार्ग से बाँसवाड़ा पहुँचा। प्रांत संगठन मंत्री मा0 धर्मराज भाईसाहब से वार्ता हुई और मा0 कैलाश चन्द्र जायसवाल जी से दूरभाष पर मिले संकेत के अनुसार द्विचक्र वाहन (मोटर–साइकिल) से सज्जनगढ़ के आम्बापुरा स्थित विद्या मंदिर में आयोजित आचार्य–संयोजक वर्ग में उपस्थित हुआ।

वहाँ से अपना दोनों थैला सहित अपने जिला प्रमुख सेवाव्रतियों के साथ बारी–बारी से चारों जिलों के कुल 12 स्थानों पर आचार्य–समिति बैठक में सहभागिता हुई। रात्रि विश्राम प्रायः आचार्याओं के घर ही हुआ। एक रात

कुशलगढ़ के पास देवीगढ़ जैन मंदिर में तथा एक–एक रात्रि श्री चेतन दास डामोर एवं श्री वीरेन्द्र सिंह जिला प्रमुख के घर विश्राम का आत्मीयतापूर्ण सुखद आनंद की अनुभूति हुई। अपने कुल 15 केन्द्रों का प्रत्यक्ष अवलोकन तथा केन्द्रों की गतिविधियों से अवगत हुआ। इनके अतिरिक्त केन्द्र के परिवार मिलन कार्यक्रम में भी रहने का अवसर प्राप्त हुआ। इस बीच जगह–जगह स्थित मंदिरों के लाभ से वंचित भला कैसे रह सकते थे। इन देव–दर्शन की श्रृंखला में सांडोलमाता मंदिर, गौतमतेश्वर महादेव मंदिर, मंगलेश्वर महादेव मंदिर आदि प्रमुख रहे। दिनांक 09.08.2024 को अन्तरराष्ट्रीय आदिवासी दिवस के अवसर केन्द्रों में अवकाश था। इन दिन राजस्थान–गुजरात की सीमात पर ऊँची पहाड़ियों पर स्थित महान संत स्वातंत्र्यवीर श्री गोविंद गुरु का स्मृति वन, मानगढ़ के दर्शन का सुअवसर मिला। यह वनवासी भील समाज का एक प्रमुख तीर्थ एवं श्रद्धा का केन्द्र है। यहाँ श्री गोविन्द गुरु से जुड़ी कई प्रमुख घटनाओं से संबंधित तथा कई वनवासी संत महात्माओं गुरुओं का संग्रहालय प्रेरणा का केन्द्र के रुप में प्रसिद्ध है। हजारों पर्यटक इस पावन भूमि का दर्शन करने आते है।

कुल मिलाकर यह 10 दिवसीय चितौड़ प्रांत का आवासीय प्रवास कई दृष्टि से हमारें जीवन के लिए प्रेरणास्पद रहा। इस प्रवास क्रम में केन्द्र के अवलोकन, आचार्यों एवं समिति के सदस्यों से वार्ता तथा सेवाव्रतियों के साथ प्रवास में कई प्रकार के अनुभव आए तथा आवश्यकतानुसार केन्द्र संचालन की सुव्यवस्था, समिति सदस्यों का सहयोग, आचार्यों की क्रियाशीलता, बच्चों की उपस्थिति एवं शिक्षा–संस्कार–मेघा विकास की गतिविधियों में आवश्यक सुधार हेतु सुझाव दिए गए। हमारे पॉचों जिला प्रमुखों तथा सभी निरीक्षिकाओं के साथ विचार विमर्श से सम्पूर्ण चितौड़ प्रांत के सभी केन्द्रों को व्यवस्थित स्वरुप देने, मंत्रों, गीतों के शुद्ध–शुद्ध उच्चारण, आसन–प्राणायाम की शुद्धता, नियमितता, मेधा व विशिष्ट प्रतिभाओं यथा–नृत्य, गायन–वादन, अभिनय, हस्तकला, शिल्पकला, वक्तृत्व कला, कथा–कथन, कवितापाठ आदि में विकास की दृष्टि से विशेष प्रयत्न करने का आग्रह करते हुए इनके उपयुक्त विकास की कामना की गई।

——————×——————

संगठन के बढ़ते चरण ....

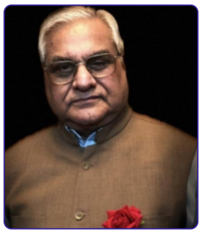

आर्य रविदेव गुप्ता
अध्यक्ष–दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल
चेयरमैन–हिन्द पुनरुत्थान संघ ट्रस्ट

आज से 2 दशक पूर्व सन् 2002 में माननीय वीरेन्द्र जी हमारे महानगर में श्रीहरि सत्संग समिति इन्द्रप्रस्थ के प्रभारी नियुक्त होकर आये। मुझे उनके साथ इस संगठन के महामंत्री के रुप मे कार्य करने का दायित्व मिला।

अति उत्साही होने के कारण उन्होंने पूरे महानगर में स्थान–स्थान पर नगरशः बैठकें लेने का क्रम बनाया। अनेकों बैठकों में सम्मिलित होकर श्रीहरि सत्संग समिति के कार्यों व महत्व को समझते–समझाते मेरे मन में विचार आया कि स्वयं इस कार्य को प्रत्यक्ष देखे बिना समाज को ही समझाने का प्रयास करना एक तरह का खोखलापन व अनैतिकता सा लगता है। वीरेन्द्र जी तो पहिले से आग्रह कर रहे थे। मेरे कहते ही योजना बन गई और हमने तुरन्त ही पीलीभीत अंचल में जाने का निश्चय किया।

वनयात्रा का अनुभव :– इस प्रथम वनयात्रा में ही जो कष्टप्रद अनुभव हुए उनसे मेरी इस कार्य के प्रति श्रद्धा असीमित हो गई और यह भी आभास हुआ कि हमारे ग्राम व वनप्रदेश निवासी कितनी अभावग्रस्त परिस्थितियों में जीते हैं। आज हमारे एक अभियान के यही साधारण से दिखने वाले कार्यकर्ता कितना असाधारण कार्य करके, समाज व देश की कितनी बड़ी सेवा कर रहे हैं।

नगरीय कार्यक्रमों का अनुभव :– सन् 2004 में दिल्ली में तमिल संगम, आर. के. पुरम में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया। दीदी मां साध्वी ऋतंभरा जी का आशीर्वाद समस्त उपस्थित श्रोताओं ने प्राप्त कर सारे महानगर में समिति के कार्य को गति व विस्तार दिया।

सन् 2008 में पूर्वी दिल्ली में गगन विहार में एक भव्य कार्यक्रम श्री मंयक शेखर व सुश्री डा0 रुकमणी गुप्ता के अथक प्रयास से संभव हुआ। इन 2 समर्पित व उत्साही कार्यकर्ताओं की प्राप्ति समिति की बड़ी उपलब्धि सिद्ध हुई।

लगभग एक दशक तक वीरेन्द्र जी के मार्गदर्शन में सहयोगी के रुप में अनेकों बैठकों में जनसामान्य को संबोधित करते हुए सारे महानगर में एक समिति का सशक्त नेटवर्क स्थापित कर पाने के सफल अनुभव से आज भी सोचकर अपूर्व आनन्द व गर्व की अनुभूति होती है। उन्हीं दिनों मुम्बई में एक विशाल कार्यक्रम में इन्द्रप्रस्थ के प्रतिनिधि के रुप में अपने वक्तव्य में मुझे यह गर्वोक्ति करने का भी साहस हो गया कि "धन–बल में आप श्रेष्ठ होंगे परन्तु जन–बल में हम आपसे बहुत आगे हैं।"

वनांचल की पाती का प्रकाशन :— समिति ने एक मासिक मुखपत्र निकालने का निश्चय किया जिसमें सारे देश की हमारी गतिविधियों का समाचार प्रकाशित होता था। मुझे सोचकर अत्यन्त संतोष का भी अनुभव होता है कि नितान्त अनुभवहीन होते हुए भी उस पत्रिका के सम्पादक के रुप में उसे प्रतिष्ठित व प्रचलित करने में सफलता प्राप्त की। मैं आज भी सम्पादक मंडल के मार्गदर्शक के रुप में सहयोगी हूं।

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन की स्थापना :— सन् 2016 में श्रीहरि सत्संग समिति को एक नये सर्वस्वीकार्य रुप में परिवर्तित करने की योजना में भी सहयोगी के रुप में उसके ट्रस्ट डीड को अंतिम रुप देकर हिंदी में अनुवाद किया।

दायित्व परिवर्तन :— संगठन की योजना से मेरा दायित्व परिवर्तन होकर 'एकल विद्यालय फाउंडेशन आफ इन्डिया' के क्रमशः महामंत्री, अध्यक्ष व चैयरमैन बन जाने पर भी मेरा ह्रदय से जुड़ाव इस प्रकल्प से निरन्तर बना रहा है। प्रत्यक्ष रुप से सक्रिय न रह पाते हुए भी, आवश्यकतानुसार सहयोग करने का मन में उत्साह बना रहता हैं।

आर्य समाज का कार्यकर्ता होने के कारण इस विषय की चर्चा वहां करते हुए समय—समय पर कार्यक्रम आर्य समाजों में करने व करवाने का प्रयत्न चलता ही रहता है। वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा ''प्रतिभा विकास केन्द्र'' की सन् 2022 में योजना आरम्भ की गई। आज पूरे देश में 1000 से अधिक केन्द्र चलते देखकर मन में प्रसन्नता का अनुभव होता है। कुछ आर्य समाजों को भी इस कार्य में सहयोग करने की प्रेरणाा की।

संगठन के निरन्तर बढ़ते हुए चरणों का मैं अभिनन्दन करता हूं और ईश्वर से इसकी सफलता की कामना करता हूँ।

———×———

उपेक्षित बच्चे और समाज का दायित्व

गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र'
वरिष्ठ साहित्यकार, लेखक

21वीं शताब्दी का बच्चा आँखें खोलते ही स्वयं को वैज्ञानिक युग में देखता है। बच्चे ओस की बूँदों की भाँति पवित्र, निश्छल और कोमल होते हैं। उनके सतरंगी सपने उनकी चंचल आँखों से साफ झलकते हैं। उनके कोमल मन में भेद – भाव के लिए कोई स्थान नहीं होता। उन्हें तो बस बढ़ना है, गुनना है और मग्न रहना है। ये बच्चे ही तो कल के भविष्य हैं।

जहाँ तक बात हमारे देश की है, उसमें एक ही समय में एक ही देश की परिस्थितियों में बहुत अधिक विरोधाभास है। आज जहाँ देश के कई बड़े – बड़े नगर तथा महानगर जैट युग में पहुंच चुके हैं, वहीं अनेक स्थल ऐसे भी हैं, जो आजतक बैलगाड़ी युग में जी रहे हैं। बच्चों का लालन–पालन तथा उनके विकास में भी ऐसी विपरीत परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है। एक ओर सुख – सुविधा संपन्न घर के बच्चे, ज्ञान – विज्ञान के भण्डार से पुष्पित – पल्लवित हैं, वहीं दूसरी ओर शहर के कुछ कोनों में, वनांचल, के क्षेत्रों एवं सुदूर ग्रामीण अंचलों में कठिनाइयों में गुजर – बसर करने वाले लोग भी हैं, जहाँ विकास की कुछ किरणें भी अभी तक नहीं पहुँची हैं। आज भी देश के कुछ भागों में लोगों का जीवन शोषित,वंचित ,दमित तथा अति पिछड़े रूप में आदिमानव के जैसा अभावग्रस्त है। झुग्गी – झोंपड़ियों में रहने वाले ये उपेक्षित बच्चे प्रतिदिन महानगरों की सड़कों पर, बाजारों में और मंदिरों के बाहर फटे – पुराने कपड़ों में, खाली कटोरा हाथ में लिए भीख मांगते देखे जा सकते हैं। इन दयनीय बच्चों को देख मन सोच उठता है कि यही है हमारे भारत का भविष्य? क्या यही है भारत की वास्तविक तस्वीर!

यहाँ हम उन बच्चों के विषय में विमर्श कर रहे हैं, जिन्हें विरासत में वह सब नहीं मिला, जो एक आम बच्चों को मिलता है। वे अत्यंत निर्धन और वंचित परिवार से आते हैं। ये बच्चे अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य एवं भोजन से तो वंचित रहते ही हैं, जैसे–जैसे थोड़े बड़े होते हैं, इनकी आँखों में बसे सपने टूट जाते हैं, क्योंकि तब वे या तो बाल श्रमिक बन चुके होते हैं या पथ – भ्रष्ट होकर चोरी, ठगी, लूटमार, नशा, यौन शोषण, दुष्कर्म, धोखेबाजी,उद्दंडता जैसे अनैतिक कार्यों में लिप्त हो जाते हैं। कुछ बच्चे अन्य कार्य भी करते हैं, जैसे अखबार बाँटना, होटल में सफाई करना, बर्तन धोना, भारी माल ढोना, माता – पिता के कामों में हाथ बँटाना, किंतु उनका स्तर एक बँधुआ मजदूर से अधिक नहीं होता। ये बाल मजदूर बहुत ही सस्ते दाम पर और आसानी से मिल जाते हैं। वे केवल अपना पेट भरते हैं, फिर भी स्वामी द्वारा अपशब्दों से अपमानित किये जाते हैं और कभी–कभी मार भी खाते हैं। फलतः उनका भविष्य अंधकारमय हो जाता है। इससे न केवल बच्चों का बचपन छिन जाता है, अपितु वे शिक्षा से दूर हो जाते हैं। इन बच्चों में गरीबी, प्रतिशोध की भावना, मानसिक तनाव, असुरक्षा का भाव, अचेतन में लैंगिक क्षुधा का होना आदि कुप्रवत्तियाँ भी पनप जाती हैं। बच्चे का बौद्धिक गुणांक(आई. क्यू.) निम्न होने से उसमें गलत आदतें और बुरी संगत उसे जल्दी घेर लेती हैं।

इन बच्चों के अभिभावक भी प्रायः निर्धन, असहाय और अव्यवस्थित जीवन जी रहे होते हैं,

जिससे वे अपनी संतान को सही जीवन जीने का मार्ग नहीं बता पाते हैं। इससे बच्चों को वांछित जीवन – मूल्यों का आशय पता नहीं हो पाता और उन्हें सुसंस्कार नहीं मिल पाते।

उपेक्षित बच्चों का जीवन – स्तर ऊँचा उठाने के लिए अभिभावक, सरकार और समाज का महत्वपूर्ण दायित्व है। संक्षेप में इस समस्या का निदान निम्नवत किया जा सकता है –

–अभावों से संघर्ष करते हुए भी बच्चों को संस्कारों की शिक्षा माता–पिता द्वारा दी जा सकती है। घर – परिवार में बड़ों का आदर करना, सत्य भाषण, परस्पर सहयोग, सादा जीवन, अच्छे और बुरा स्पर्श का ज्ञान, स्वयं तथा घर की साफ–सफाई, प्रेम, आत्मीयता, नैतिक आचरण,उदारता, अच्छा स्वभाव, अच्छी आदतें, सदाचार आदि सद्‌गुण ही उत्कृष्ट जीवन के आधार हैं। इन संस्कारों का ज्ञान देना और बच्चों का समुचित लालन–पालन करना ही परिवार का दायित्व है। उन्हें अच्छा वातावरण देना भी उनकी जिम्मेदारी है। जिन घरों में लड़ाई – झगड़े, अशांति, कलह रहती है, वहाँ बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। माता–पिता के व्यसन, आदतों का अनुकरण बच्चे सबसे पहले करते हैं। साहस, निर्भीकता, आत्म गौरव, देशप्रेम की भावना बचपन से ही पनपती है। परिवार के वातावरण से ही बच्चों के संस्कार, भाव, विचार, आदर्श आदि गुणों का निर्माण होता है। अतः माता–पिता को बच्चों के लिए स्वस्थ एवं संस्कारवान गुणवत्तापूर्ण वातावरण निर्मित करना चाहिए।

–केंद्र और राज्य सरकारें श्अन्तिम जनश के विकास के लिए अनेक लाभदायक योजनाएं चला रही है, लेकिन इन बच्चों की स्थिति जस की तस लग रही है। इन बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य में अभी अपेक्षित सुधार नहीं हुआ है। बच्चों को शिक्षित बनाने के लिए सर्वशिक्षा अभियान चलाया जा रहा है, लेकिन इसका लाभ इन उपेक्षित बच्चों को नहीं मिल पा रहा है। यदि ऐसा प्रयास सचमुच में सार्थक हुआ होता, तो ये 5 से 10 वर्ष तक के बच्चे चौराहों पर भीख क्यों मांग रहे होते। निश्चित रूप से ये बच्चे गरीब और अत्यंत पिछड़े हैं, जिनको विद्यालयों में प्रवेश नहीं मिला। निजी स्कूलों की ये बच्चे फीस नहीं भर सकते और सरकारी स्कूलों में अव्यवस्था है। किसी ने इन बच्चों के स्कूल न जाने के कारण जानने के प्रयास नहीं किये, यह स्थिति अत्यंत चिन्ताजनक विषय है।

संविधान के अनुच्छेद 5 4 में दिए निर्देश के अनुसार – राज्य बच्चों को 14 वर्ष की आयु तक निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा प्रदान करेगा। आज 6 से 11 वर्ष तक के 52 प्रतिशत बच्चे स्कूल से वंचित हैं। अतः आवश्यक है कि इन उपेक्षित बच्चों को भी अनिवार्य रूप से विद्यालयों में प्रवेश दिलाकर उन्हें शिक्षित एवं सभ्य नागरिक बनाया जाए।

–ग्रामीण अंचल या शहरी क्षेत्रों में रह रहे बच्चों के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाएं, जिसमें बच्चों के साथ अभिभावकों को बच्चों की पढ़ाई के साथ वृक्षारोपण, ऊर्जा बचत, पानी का समुचित प्रयोग, साफ–सफाई के प्रति जागरूक किया जाए।

–बच्चों को पशु – पक्षियों को चारा – पानी देने का आग्रह किया जाए तथा उन्हें कभी भी न सताने का संकल्प लिया जाए।

–बच्चों को यातायात के नियमों का पालन करने की शिक्षा दी जाए।

–वे अपने किसी साथी को तंग न करें तथा उनसे अनुचित और अशिष्ट व्यवहार न करें।

–बच्चे दलित, शोषित, दमित, ऊँच – नीच जैसी कुत्सित भावनाओं से ऊपर उठकर सभी के साथ समरसता का भाव प्रदर्शित करें।

–समाजसेवी, गणमान्य नागरिक तथा समाज सुधारकों को उपेक्षित बच्चों के सर्वांगीण विकास के

लिए आगे आना चाहिए। उन्हें भिक्षा – वृत्ति, बाल श्रम, नशा या गलत आचरणों में लिप्त बच्चों का शारीरिक और मानसिक परामर्श (कौंसलिंग) करके समस्या का निदान करवाना चाहिए। उनके भोजन, साफ–सफाई एवं शिक्षा का समुचित प्रबंध करना चाहिए। बच्चे के माता–पिता को उचित परामर्श देकर बच्चे को कोई उपयुक्त काम अथवा उसे कला – कौशल विकसित करने का प्रशिक्षण दिलाया जाए।

–आदिवासी एवं वनांचलों में जाकर वास्तविक जानकारियां लेकर बच्चों की समस्याओं को दूर किया जाए। इन बच्चों के लिए समर्पित समाजसेवी एवं गैर – सरकारी संगठनों को समाज तथा जनता का भरपूर सहयोग मिलना चाहिए तथा उनके लिए किए जा रहे प्रयासों को राष्ट्रीय स्तर पर सराहा जाना चाहिए।

–समाज के सक्षम धनिकों तथा सद्भावी नागरिकों को ऐसे सक्रिय संगठनों को भरपूर समर्थन और सहयोग देना चाहिए।

–बच्चों को बालमन के अनुकूल एवं जीवनोपयोगी बालसाहित्य उपलब्ध कराया जाए. जिससे उनका मनोरंजन के साथ – साथ ज्ञान का विकास हो सके।

–आजकल बच्चे मोबाइल से उपयोगी और हानिकारक दोनों प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं, जिससे वे उसके लती और अपराधी बन रहे हैं। वे मोबाइल से सीखकर अनेक असमाजिक कृत्य कर बैठते हैं। उन्हें इस रोग से मुक्ति दिलानी होगी।

–बच्चों में देशप्रेम और मातृभूमि के प्रति समर्पण भाव उत्पन्न करना होगा, जिससे वे देशविरोधी गतिविधियों से दूर रह सकें।

–बच्चों को शरीर से स्वस्थ एवं बलवान बनाने के लिए घर के बाहर के खेलों में रुचि लेने के लिए प्रेरित किया जाए।

अपने मन के इन भावों को लिये मुझे (बहन रुकमणी गुप्ता जी के सहयोग से) वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन की 'वनांचल की पाती' के कुछ अंक पढ़ने को मिले। मुझे प्रसन्नता है कि यह स्वयंसेवी संगठन सरकार सहायता के बिना ही समृद्ध–प्रबुद्ध समाज के सहयोग से प्रतिभा विकास केन्द्रों को नगर तथा वनक्षेत्रों में आवश्यकतानुसार संस्कारपूर्ण शिक्षा प्रदान कर वंचित समाज के इन बच्चों का जीवन सुधारने के साथ समाज को भी उन्नत करने का कल्याणकारी कार्य कर रहा है। अस्तु, 'सबका साथ सबका विकास' में निहित उदात्त भावना के अनुरूप देश के भावी कर्णधार ये बच्चे उपेक्षित नहीं रहेंगे तथा शिक्षित, संस्कारित, स्वावलम्बी होकर समरस समाज में अपनी भूमिका निभायेंगे।

———×———

संगठन का उद्देश्य

मनीष तिवारी
पूर्णकालिक सेवाव्रती कार्यकर्ता
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।

सिर्फ एक दिल ही है जो बिना आराम किये सालों काम करता है। हमारा सर्वप्रथम परम कर्तव्य है, ऐसा विद्वज्जनों का भी कहना है कि सदाचार की रक्षा अनुपालन हमें अपने प्राणों से भी अधिक करनी चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति को अपने देश–अपने राष्ट्र के प्रति अभिमान होता है। मुझे इस बात पर गर्व है कि मैं भारत का रहने वाला हूँ। भारत देश की संस्कृति, भौगोलिक स्थिति तथा इतिहास गौरवशाली है। विदेशियों का आक्रमण तथा अंग्रेजों की गुलामी–इन सब समस्याओं का सामना करते हुए भारत ने कभी प्रगति की राह पर चलना ना छोड़ा। कई सौ साल अंग्रेजों के आर्थिक शोषण और गुलामगिरी सहने के बाद किसी ने सोचा भी नहीं था कि भारत इतनी जल्दी विकास के पथ पर अपने कदम बढ़ाएगा। भारत का अंग्रेजों ने जो शोषण किया उसके बाद भारत की स्थिति दयनीय हो गई थी। गरीबी, आंतरिक असुरक्षा, अशांति– इन समस्याओं का सामना करते हुए भारत प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता रहा।

भारत में हमेशा ही विज्ञान के क्षेत्र में अधिक रूचि दिखाई है। भारत ने आयात करने से अच्छा अधिक से अधिक चीजें अपने देश में उत्पादन करके आत्मनिर्भर बनने की नीति पर जोर दिया है। भारत के आज हर गाँव, शहर तक बिजली–पानी पहुंच गया है। इससे स्पष्ट होता है परिश्रमी, शिक्षित, संस्कारित भारत निरंतर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है।

देश का विकास तभी संभव हो पाएगा जब देश के प्रत्येक नागरिक शिक्षित संस्कारित होंगे। अपने देश को उन्नति तथा प्रगति पथ पर ले जाने के लिए **सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया** का ध्येय लेकर वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन संगठन ने दैनिक संस्कार परिवार मिलन, मासिक तथा वार्षिक संस्कार परिवार मिलन के साथ–साथ बच्चो के लिए प्रतिभा विकास केन्द्रों का दिल्ली, एन.सी.आर तथा देश के अनेक प्रांतों के पिछड़े वंचित नगरीय तथा वनवासी क्षेत्रों में 2 से ढ़ाई वर्ष पूर्व संचालन प्रारम्भ किया। जो आज सफलतापूर्वक बच्चों को हिन्दु सनातन संस्कृति, संस्कार से संस्कारित, स्वाभिमानी तथा स्कूली शिक्षा में सहयोग देकर देश का आदर्श नागरिक बनाने का, इसी के साथ बच्चों के साथ इनके परिवारों को भी मासिक संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रम में आमंत्रित कर संस्कारित कर धर्मान्तरण से बचाने का प्रयास किया जा रहा है। वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के आयाम प्रतिभा विकास केन्द्र के द्वारा समाज का प्रत्येक परिवार के सभी सदस्य बच्चे–बच्चियों को संस्कारित, स्वावलंबबी, स्वाभिमानी बनें। इसी उद्देश्य के साथ संगठन देश के उत्थान में कार्य कर रहा है।

शिक्षा कभी झुकने नहीं देगी,
संस्कार कभी गिरने नहीं देंगे।"

सेवाव्रती कार्यकर्ताओं का आवासीय प्रशिक्षण वर्ग - 2024

वीरेन्द्र कौण्डिन्य
केन्द्रीय सह–संयोजक
प्रतिभा विकास केन्द्र

वनवासी रक्षा परिवार फाउंण्डेशन के तत्वावधान में चल रहे प्रतिभा विकास केन्द्रों के संचालन,प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन में अहं भूमिका निभाने वाले सेवाव्रतियों का पंचदिवसीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग प्रभु श्रीराम की पावन जन्मभूमि श्री आयोध्या धाम के कारसेवकपुरम् में दिनांक 9.09.2024 से 13.09.2024 को हर्ष व उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। यह वर्ग कई दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय एवं स्मरणीय इसलिए रहेगा क्योंकि यह की वनवासी रक्षा परिवार फाउंण्डेशन की केन्द्रीय समिति की वार्षिक योजना व संकल्प बैठक के तुरंत बाद सम्पन्न हुआ। एक ओर सरयु का पावन तट तथा हमारी संस्कृति व जनजन के रोम–रोम में विराजमान,नवचेतना,आदर्श एवं राष्ट्राभिमान के प्रेरणास्रोत प्रभु श्री राम की पवित्र जन्मभूमि की भावना पूरित सुगंध से सुवासित वातावरण था तो दूसरी और सम्पूर्ण विश्व के हिन्दू समाज के स्वाभिमान को जागृत,सम्पोषित,संरक्षित करने वाली शक्ति विश्व हिन्दू परिषद् व श्रीराम जन्मभूमि तीर्थन्याय का पावन सान्निद्ध प्राप्त हो रहा था।

इस वर्ग में प्रांतशः कार्यकर्ताओं की उपस्थिति उस प्रकार रही–चितौड़ प्रांत(राजस्थान)–19 महिला,3 पुरूष,कुल.22, मालवा प्रांत से 5 पुरूष, छतीसगढ़ से–01 पुरूष,उत्तर से 2 पुरूष,दिल्ली एन.सी.आर.से 5 पुरूष,4 महिलाएँ कुल–09,असम से 6 पुरूष,उत्तरी एंव दक्षिणी बंगाल प्रांत से 7 पुरूष,2महिलाएँ कुल–09,उड़ीसा से 2 पुरूष,2 महिला कुल–04, झारखण्ड से 3 पुरूष,4 महिला कुल–7, द.बिहार से 3 पुरूष,1 महिला कुल–04,तमिलनाडू–01 कुल–70 की सहभागिता हुई। उनके अतिरिक्त 02 केन्द्रीय अधिकारी मा. वीरेन्द्र जी (केन्द्रीय संगठन प्रभारी) तथा श्री दिग्विजय गुप्ता (केन्द्रीय महामंत्री)जी की उपस्थिति प्रेरणादायी रही। इस वर्ग में कुल 2 बौद्धिक सत्र,3चक्रीय सत्र,3प्रतिभा प्रर्दशन के सत्र,07 अभ्यास के सत्र तथा 01दृश्य–श्रव्य सत्र हुए। इनके अतिरिक्त सभी सत्र चर्चात्मक हुए जिसमें प्रतिभागियों की सक्रिय सहभागिता हुई।

इस वर्ग में विशिष्ट मार्गदर्शक के नाते श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्याय के महासचिव मा. चम्पत राय जी एवं विश्व हिन्दू परिषद् के केन्द्रीय सहमंत्री मा.हरिश्चन्द तिवारी जी का प्रेरणास्पद मार्गदर्शन मिला। भगवान श्री राम की मनमोहक बाल छवि, भव्य श्रीराम मंदिर प्रेरणास्पद हनुमानगढ़ी मंदिर तथा अयोध्याधाम का कण–कण,गली–गली की पावन स्मृति

सेवाव्रतियों के लिए चिरस्मरणीय एंव प्रेरणादायी रहा है।

सामान्य विषयों के गहन अभ्यास, चर्चा–परिचर्चा के माध्यम से कार्यकर्ताओं की व्यापक दृष्टि,चिंतन की दिशा आदि को स्पष्ट करने का भरपूर प्रयास रहा। वर्ग में सभी कार्यकर्ताओं ने कार्य के विस्तार के साथ गुणात्मक विकास को सुदृढ़ करने का संकल्प लेते हुए जिन गाँव / मोहल्लों में केन्द्र चल रहे हैं वहाँ के सम्पूर्ण समाज को अपने संस्कार के कार्यक्रमों से जोड़कर उनके परिवारों में सनातन संस्कृति को सुदृढ़ करने का व्रत लिया गया। नवीन प्रयोग,प्रतिभा विकास की विविध विधाएँ,आवासीय प्रवास की विशेषता,गाँव में बैठकों का आयोजन करने का संकल्प उस वर्ग के लिए नवाचार रहा। अपने केन्द्र के हर बालक बालिका द्वारा अपने पड़ोस के किसी एक बच्चे को संस्कारित–शिक्षित कराने के लिए प्रप्ति करने का संकल्प लिया गया।

समापन सत्र में हिन्दुत्व की अवधारणा स्पष्ट करते हुए वर्तमान वैश्विक वैचारिक विमर्श की चुनौतियाँ और उसके विभ्रम को दूर कर सनातन संस्कृति के वैचारिक विमर्श को खड़ा करने का आह्वान करते हुए प्रतिभा विकास केन्द्र के माध्यम से एक नया समाज बनाने का आह्वान आदरणीय वीरेन्द्र जी भाई साहब नें किया है। इस वर्ग में उस 28 मातृशक्ति की सक्रिय सहभागिता इसकी प्रमुख विशेषता रही।

इस प्रकार यह पाँच दिनों का वर्ग नवीन ऊर्जा,विशिष्ट अनुभूतियों एवं बड़े संकल्प तथा उनके फलीभूत होने की संभावनाओं के साथ सोल्लास सम्पन्न हुआ।

——————×——————

शायद आज कोई फरिश्ता आए

श्रीमती अल्का अग्रवाल
एस.एम.सी. ग्लोबल कैपिटल

शायद आज कोई फरिश्ता आए,
सर्द रात का कहर बढ़ रहा,
तापमान तो नित्य घट रहा,
कट–कट कट–कट दांत बज रहे,
घुटने पसली बीच धंस रहे,
बेबस ताके आस लगाए,
शायद आज कोई फरिश्ता आए।

नव वर्ष के बाजार सज रहे,
क्रिसमस के गिटार बज रहे,
बाजारो की शान बढ़ रही,
उपहारो की झड़ी लग रही,
बेबस ताके आस लगाए,
शायद आज कोई फरिश्ता आए।

व्यंजनो का है मजा आ रहा,
कॉफी मिष्ठान खूब है भा रहा,
सड़के गलियां खूब सज रही,
होटल रेस्टोरेंट में कतार लग रही,
बेबस ताके आस लगाए,
शायद आज कोई फरिश्ता आए।

नरम मुलायम बिस्तर भाए,
रेशमी कम्बल तन सहलाए,
हीटर गीजर सब सुविधाएं,
सर्दी कब आए और जाएं,
बेबस ताके आस लगाए,
शायद आज कोई फरिश्ता आए।

बस एक गरम चादर मिल जाएं,
कपकपाती आंखे सो जाएं,
संवेदित कुछ हृदय हो रहा,
देख–देख लाचारी,
मन मे ये आवाज उठ रही,
इंसान की इंसान पर है कुछ जिम्मेदारी,
बेबस ताके आस लगाए,
शायद आज कोई फरिश्ता आए,

—————×—————

सेवा से मिलता नित यशगान है।

सेवा में सद्भाव समाहित,
कर्मों का सम्मान है।
सेवा से जीवन की शोभा,
मलता नित यशगान है।।

दीन–दुखी के अनु पौंछकर
जो देता है सम्बल।
पेट है भूखा, तो दे रोटी,
दे सर्दी में कम्बल।
अंतर्मन में है करुणा तो,
मानव गुण की खान है।
सेवा से जीवन की शोभा,
मिलता नित यशगान है।।

धन–दौलत मत करो इकट्ठा,
कुछ नहिं पाओगे।
जब आएगा तुम्हें बुलावा,
केवल तुम पछताओंगे।
हमको निज कर्तव्य निभाकर,
पा लेनी पहचान है।
सेवा से जीवन की शोभा,
मिलता नित यशगान है।।

शानोशौकत नहीं काम की
चमक–दमक में क्या रक्खा।
वही जानता सेवा का फल
जिसने है इसको चक्खा।
देव नहीं, मानव कहलाऊं,
यही आज अरमान है।
सेवा से जीवन की शोभा,
मिलता नित यशगान है।।

माता–पिता, गुरुजन की सेवा
संतों का सम्मान रखें।
हर मानव में ईश्वर देखें,
सेवा का नित ध्यान रखें।
परसेवा को जो है तत्पर,
वह मानो भगवान है।
सेवा से जीवन की शोभा,
मिलता नित यशगान है।।

अधिकारों की शान तभी है,
फर्ज निभाए जब बंदा।
सेवाप्रति संकल्पित होकर,
करुणा का पन पे धंधा।
भावरहित जन,
उच्च पदों पर,
सेवा का नुकसान है।
सेवा से जीवन की शोभा,
मिलता नित यशगान है।।

-प्रो. (डॉ.) शरद नारायण खरे

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

संस्कार परिवार योजना-संस्कार पत्र

हमारी दैनिक गतिविधियाँ

- प्रातः सूर्योदय से पूर्व जागरण एवं नित्य क्रिया सम्पादन ।

ब्रह्मनाद - ॐ (तीन आवृति)

गायत्री मंत्र - (तीन आवृति)

ॐ भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं । भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

महामृत्युंजय मंत्र (तीन आवृति)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।।

पुरुषार्थ जागरण मंत्र :-

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती । करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम् ।।

क्षमा स्तुति मंत्र :-

समुद्रवसने देवि ! पर्वतस्तन मंडले । विष्णुपत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।

त्रिदेव-नवग्रह स्तुति मंत्र :-

ब्रह्मा मुरारीः त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु केतवः, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।

भारत वंदन मंत्र :-

हिमालयं समारभ्य यावदेन्दु सरोवरम् । तं देव निर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते ।
रत्नाकराधौतपदां हिमालय किरीटिनीम्। ब्रह्मराजर्षि रत्नाढ्यां वंदे भारतमातरम् ।।

निम्न आसनों में से कोई 6 आसन नियमित करना अपेक्षित है।

1. ताड़ासन 2. वृक्षासन 3. वीरभद्रासन 4. त्रिकोणासन 5. सर्वांगासन 6. हलासन
7. मण्डूकासन, 8 वज्रासन 9. मर्कटासन 10. भुजंगासन 11. धनुरासन 12. पवन मुक्तासन ।

प्राणायाम :-

1. भस्त्रिका प्राणायाम - 24 आवृति
2. कपालभाति - 120 आवृति (न्यूनतम 2 मिनट)
3. अनुलोम-विलोम - 10 आवृति
4. शीतली या उज्जायी - 10 आवृति (शीतकाल में उज्जायी प्राणायाम)
5. भ्रामरी प्राणायाम - 10 आवृति

राष्ट्रभक्ति गीत / भजन

बोध कथा / समसामयिक चर्चा - 5 मिनट

टिप्पणी :- पद्मासन या सुखासन में मंत्रों का जप करना चाहिए।

पंजीकृत कार्यालय :- बी- 4, द्वितीय तल, हाउसिंग सोसाइटी, साउथ एक्स पार्ट-1, नई दिल्ली- 110049
सम्पर्क सूत्र :- 011 . 47980066, 47011669, 9667260911 ई-मेलः vrpfdelhi8@gmail.com

वनांचल की पाती

वनवासी रक्षा परिवार का परिवार मिलन समारोह संपन्न

फरीदाबाद, 23 दिसम्बर (रैपको न्यूज)। वनवासी रक्षा परिवार का परिवार मिलन समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर कार्यवाह भैयाजी जोशी व केंद्रीय मंत्री एवं पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रभु श्रीराम ने जिस वनवासी समाज को संगठित कर आसुरी शक्तियों का संहार किया, समाज जीवन में मानव मूल्यों की स्थापना की, उनके जीवनादर्श से अनुप्राणित वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन अपने प्रतिभा विकास केन्द्रों के माध्यम से वंचित, उपेक्षित वर्ग के बच्चों को संस्कार युक्त शिक्षा देकर उनमें स्वावलंबन, स्वाभिमान एवं राष्ट्रभक्ति की भावना जगाने तथा उनकी अंतर्निहित प्रतिभाओं के विकास में रत है। भारत मंडपम दिल्ली में आयोजित संस्कार परिवार स्नेह मिलन के केंद्रीय कार्यक्रम में विभिन्न प्रांतों के बच्चों द्वारा निर्मित ज्ञान-विज्ञान व कलात्मक रचनाओं की प्रदर्शनी एवं मनमोहक रंगमंचीय कार्यक्रमों की प्रस्तुति ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। सह संयोजक श्री राम अग्रवाल ने बताया कि प्रत्येक मनुष्य मान सम्मान के साथ सुख, शान्ति का जीवन जीना चाहता है जो शिक्षा संस्कार के साथ स्वरोजगार से ही प्राप्त हो सकता है। तुलसीदास ने कहा है कि पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं। अभाव में जी रहे परिवारों को शिक्षा, संस्कार के साथ स्वाभिमान और स्वावलंबन की शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा संचालित प्रतिभा विकास केन्द्र कर रहे हैं। वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन की गतिविधियों में शामिल दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, झारखंड, ओडिशा, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु,असम, राजस्थान प्रदेश।

डीसी द्वारा वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए निजी संस्थानों से आह्वान

फरीदाबाद, 23 दिसम्बर (रैपको न्यूज)। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग द्वारा निर्देश की पालना करते हुए डीसी विक्रम सिंह ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और आस-पास के क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग द्वारा यह निर्देश दिया गया है कि वायु गुणवत्ता में और गिरावट को देखते हुए, तत्क्क गंभीर वायु गुणवत्ता (दिल्ली तह्-450) के चरण ह्ह्ह् के तहत परिकल्पित सभी कार्रवाइयों को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (ह्ह्क) में संबंधित सभी एजेंसियों द्वारा सही गंभीरता से लागू किया जाना चाहिए और ह्ह्क राज्य सरकारें तहह्ह्ह्ह सार्वजनिक, नगरपालिका और निजी कार्यालयों को 50ह्र क्षमता पर काम करने और बाकी को घर से काम करने की अनुमति देने पर निर्णय ले सकती हैं। डीसी विक्रम सिंह द्वारा जिला फरीदाबाद के सभी निजी संस्थानों और कॉर्पोरेट कार्यालयों को सलाह दी जाती है कि वे अपने कर्मचारियों को तुरंत प्रभाव से अगले आदेश तक घर से काम करने के लिए निर्देशित करें और ऐसा करके, क्षेत्र में वायु गुणवत्ता को बनाए रखने और सुधारने के उद्देश्य से तत्क्क उपायों के प्रभावी कार्यान्वयन में सहायता करें और उन्होंने बताया कि अगले आदेश तक जिला फरीदाबाद के सभी सार्वजनिक कार्यालयों में निम्नलिखित कार्यालय समय प्रभावी रहेगा। राज्य सरकार के अधीन कार्यालय सुबह 9−30 बजे से शाम 5−30 बजे तक तथा नगर निगम, फरीदाबाद के अंतर्गत कार्यालय सुबह 8−30 बजे से शाम 4−30 बजे तक लगेंगे।

सरकार्यवाह भैयाजी जोशी व केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल हुए शामिल

ह्यूमन इंडिया/मनोज तोमर

फरीदाबाद। वनवासी रक्षा परिवार का परिवार मिलन समारोह धूमधाम से संपन्न हुआ। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर कार्यवाह भैयाजी जोशी व केंद्रीय मंत्री एवं पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रभु श्रीराम ने जिस वनवासी समाज को संगठित कर आसुरी शक्तियों का संहार किया, समाज जीवन में मानव मूल्यों की स्थापना की, उनके जीवनादर्श से अनुप्राणित वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन अपने प्रतिभा विकास केन्द्रों के माध्यम से वंचित, उपेक्षित वर्ग के बच्चों को संस्कार युक्त शिक्षा देकर उनमें स्वावलंबन, स्वाभिमान एवं राष्ट्रभक्ति की भावना जगाने तथा उनकी अंतर्निहित प्रतिभाओं के विकास में रत है। भारत मंडपम दिल्ली में आयोजित संस्कार परिवार स्नेह मिलन के केंद्रीय कार्यक्रम में विभिन्न प्रांतों के बच्चों द्वारा निर्मित ज्ञान-विज्ञान व कलात्मक रचनाओं की प्रदर्शनी एवं मनमोहक रंगमंचीय कार्यक्रमों की प्रस्तुति ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। सह संयोजक श्री राम अग्रवाल ने बताया कि प्रत्येक मनुष्य मान सम्मान के साथ सुख, शान्ति का जीवन जीना चाहता है जो शिक्षा संस्कार के साथ स्वरोजगार से ही प्राप्त हो सकता है। तुलसीदास ने कहा है कि पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं। अभाव में जी रहे परिवारों को शिक्षा, संस्कार के साथ स्वाभिमान और स्वावलंबन की शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा संचालित प्रतिभा विकास केन्द्र कर रहे हैं। वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन की गतिविधियों में शामिल दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, झारखंड, ओडिशा, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु,असम, राजस्थान प्रदेश। संस्कारित परिवार ही पृथ्वी का स्वर्ग है। इसे प्राप्त करने के लिए किए जाने वाले दैनिक कार्य के द्वारा परिवार को संस्कारित कर यह आनंद प्रत्येक मनुष्य प्राप्त कर सकता है। अपने परिवार में दैनिक अभ्यास हेतु कार्यक्रम के अनुसार गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र का तीन-तीन बार उच्चारण, पुरुषार्थ जागरण मंत्र, क्षमा स्तुति मंत्र, नवग्रह मंत्र के साथ भारत वंदन मंत्र। प्राणायाम तथा योग का अभ्यास। मंगल गीत या भजन का गायन। घर में तुलसी गिलोय के पौधे का रोपण। इसके अतिरिक्त उपायुक्त स्थान देखकर नीम, पीपल, बरगद आदि वृक्षों का रोपण तथा पोषण। स्वदेशी भाषा, वेशभूषा एवं वस्तु का उपयोग। चीनी सामानों का पूर्ण बहिष्कार जैसी गतिविधियां संचालित करना शामिल है। दिल्ली एनसीआर क्षेत्र में 9,00,000 परिवारों को संस्कार परिवार की दैनिक गतिविधियों से जोडना। 25000 परिवार को वनवासी रक्षा परिवार बनाना अर्थात सहयोगी परिवार बनाना। महिलाओं को विशेष रूप से संस्कार परिवार योजना तथा प्रतिभा विकास केन्द्र के साथ जोडना। युवाओं को प्रतिभा विकास केंद्र के साथ समाज जागरण की गतिविधियों से जोडना। समाज प्रबोधन के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना। वनयात्रा द्वारा नगरीय समाज को वनवासी समाज से भावात्मक तथा क्रियात्मक रूप से जोडना। वनवासी तथा नगरीय क्षेत्र में शक्तिपुंज विकसित करना। वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विशेष रूप से रमेश गुप्ता, अशोक अग्रवाल, ललित बंसल, राजेश अग्रवाल, राम किशोर बिंदल, संजय लोढ़ा, कमलकांत गोयल, धर्मेन्द्र कौशिक विशिष्ट अतिथि सुरेन्द्र चावला, जीतमल चौरडिया, यशपाल मेहंदीरत्ता, विनय छाबडा,सुभाष अग्रवाल, सचिन बंसल, सत्येन्द्र प्रकाश, राजेन्द्र जिंदल, शिक्षाविद डॉ.प्रशांत भल्ला, बी.आर.भाटिया, मोहन लाल बंसल,अशोक गुप्ता, सज्जन कुमार जैन, किशन अग्रवाल बीकानेरवाला, संदीप अग्रवाल, जी.एन.गुप्ता, डॉ.प्रताप चौहान का सहयोग उल्लेखनीय रहा। इस कार्यक्रम की आयोजन समिति संयोजक सुरेन्द्र चावला, कार्यकारी संयोजक मयंक शेखर, श्रीराम अग्रवाल सह-संयोजक, राजेश दत्ता, शशि आजाद, प्रवीण मित्तल, रामचन्द्र चौधरी, दीपक अग्रवाल, अजय गुप्ता, विष्णु अग्रवाल, मंगेश निंभोरकर की विशेष भूमिका रही।

वनवासी रक्षा परिवार का परिवार मिलन समारोह संपन्न: सर कार्यवाह भैयाजी जोशी व केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल हुए शामिल

नेशनल प्रहरी/रघुबीर सिंह

दिल्ली/फरीदाबाद,22 दिसंबर। वनवासी रक्षा परिवार का परिवार मिलन समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर कार्यवाह भैयाजी जोशी व केंद्रीय मंत्री एवं पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रभु श्रीराम ने जिस वनवासी समाज को संगठित कर आसुरी शक्तियों का संहार किया, समाज जीवन में मानव मूल्यों की स्थापना की, उनके जीवनादर्श से अनुप्राणित वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन अपने प्रतिभा विकास केन्द्रों के माध्यम से वंचित, उपेक्षित वर्ग के बच्चों को संस्कार युक्त शिक्षा देकर उनमें स्वावलंबन, स्वाभिमान एवं राष्ट्रभक्ति की भावना जगाने तथा उनकी अंतर्निहित प्रतिभाओं के विकास में रत है।

भारत मंडपम दिल्ली में आयोजित संस्कार परिवार स्नेह मिलन के केंद्रीय कार्यक्रम में विभिन्न प्रांतों के बच्चों द्वारा निर्मित ज्ञान-विज्ञान व कलात्मक रचनाओं की प्रदर्शनी एवं मनमोहक रंगमंचीय कार्यक्रमों की प्रस्तुति ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। सह संयोजक श्री राम अग्रवाल ने बताया कि प्रत्येक मनुष्य मान सम्मान के साथ सुख, शान्ति का जीवन जीना चाहता है जो शिक्षा संस्कार के साथ स्वरोजगार से ही प्राप्त हो सकता है। तुलसीदास ने कहा है कि पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं। अभाव में जी रहे परिवारों को शिक्षा, संस्कार के साथ स्वाभिमान और स्वावलंबन की शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा संचालित प्रतिभा विकास केन्द्र कर रहे हैं। वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन की गतिविधियों में शामिल दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, झारखंड, ओडिशा, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु,असम, राजस्थान प्रदेश।

क्या है संस्कार रक्षा परिवार: संस्कारित परिवार ही पृथ्वी का स्वर्ग है। इसे प्राप्त करने के लिए किए जाने वाले दैनिक कार्य के द्वारा परिवार को संस्कारित कर यह आनंद प्रत्येक मनुष्य प्राप्त कर सकता है। अपने परिवार में दैनिक अभ्यास हेतु कार्यक्रम के अनुसार गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र का तीन-तीन बार उच्चारण, पुरुषार्थ जागरण मंत्र, क्षमा स्तुति मंत्र, नवग्रह मंत्र के साथ भारत वंदन मंत्र। प्राणायाम तथा योग का अभ्यास। मंगल गीत या भजन का गायन। घर में तुलसी गिलोय के पौधे का रोपण। इसके अतिरिक्त उपायुक्त स्थान देखकर नीम, पीपल, बरगद आदि वृक्षों का रोपण तथा पोषण। स्वदेशी भाषा, वेशभूषा एवं वस्तु का उपयोग। चीनी सामानों का पूर्ण बहिष्कार जैसी गतिविधियां संचालित करना शामिल है।

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन का लक्ष्य: दिल्ली एनसीआर क्षेत्र में 9,00,000 परिवारों को संस्कार परिवार की दैनिक गतिविधियों से जोड़ना।

- 25000 परिवार को वनवासी रक्षा परिवार बनाना अर्थात सहयोगी परिवार बनाना।
- महिलाओं को विशेष रूप से संस्कार परिवार योजना तथा प्रतिभा विकास केन्द्र के साथ जोड़ना।
- युवाओं को प्रतिभा विकास केंद्र के साथ समाज जागरण की गतिविधियों से जोड़ना।
- समाज प्रबोधन के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- वनयात्रा द्वारा नगरीय समाज को वनवासी समाज से भावात्मक तथा क्रियात्मक रूप से जोड़ना।
- वनवासी तथा नगरीय क्षेत्र में शक्तिपुंज विकसित करना।

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा आयोजित कायक्रम में विशेष रूप से रमेश गुप्ता, अशोक अग्रवाल, ललित बंसल, राजेश अग्रवाल, राम किशोर बिंदल, संजय लोढ़ा, कमलकांत गोयल, धर्मेन्द्र कौशिक विशिष्ट अतिथि सुरेन्द्र चावला, जीतमल चौरड़िया, यशपाल मेहंदीरत्ता, विनय छाबड़ा, सुभाष अग्रवाल, सचिन बंसल, सत्येन्द्र प्रकाश, राजेन्द्र जिंदल, शिक्षाविद डॉ.प्रशांत भल्ला, बी.आर.भाटिया, मोहन लाल बंसल, अशोक गुप्ता, सज्जन कुमार जैन, किशन अग्रवाल बीकानेरवाला, संदीप अग्रवाल, जी.एन.गुप्ता, डॉ.प्रताप चौहान का सहयोग उल्लेखनीय रहा।

इस कार्यक्रम की आयोजन समिति संयोजक सुरेन्द्र चावला, कार्यकारी संयोजक मयंक शेखर, श्रीराम अग्रवाल सह-संयोजक, राजेश दत्ता, शशि आजाद, प्रवीण मित्तल, रामचन्द्र चौधरी, दीपक अग्रवाल, अजय गुप्ता, विष्णु अग्रवाल, मंगेश निंभोरकर की विशेष भूमिका रही।

बनवासी रक्षा परिवार का परिवार मिलन समारोह संपन्न

▶▶ सरकार्यवाह भैयाजी जोशी व केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल हुए शामिल

तहलका जज्बा/लोकेश गुप्ता

दिल्ली/फरीदाबाद। वनवासी रक्षा परिवार का परिवार मिलन समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर कार्यवाह भैया जी जोशी व केंद्रीय मंत्री एवं पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रभु श्रीराम ने जिस वनवासी समाज को संगठित कर आसुरी शक्तियों का संहार किया, समाज जीवन में मानव मूल्यों की स्थापना की, उनके जीवनादर्श से अनुप्राणित वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन अपने प्रतिभा विकास केन्द्रों के माध्यम से वंचित, उपेक्षित वर्ग के बच्चों को संस्कार युक्त शिक्षा देकर उनमें स्वावलंबन, स्वाभिमान एवं राष्ट्रभक्ति की भावना जगाने तथा उनकी अंतर्निहित प्रतिभाओं के विकास में रत है। भारत मंडप दिल्ली में आयोजित संस्कार परिवार स्नेह मिलन के केंद्रीय कार्यक्रम में विभिन्न प्रांतों के बच्चों द्वारा निर्मित ज्ञान-विज्ञान व कलात्मक रचनाओं की प्रदर्शनी एवं मनमोहक रंगमंचीय कार्यक्रमों की प्रस्तुति ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। सह संयोजक श्रीराम अग्रवाल ने बताया कि प्रत्येक मनुष्य मान सम्मान के साथ सुख, शान्ति का जीवन जीना चाहता है जो शिक्षा संस्कार के साथ स्वरोजगार से ही प्राप्त हो सकता है। तुलसीदास ने कहा है कि पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं। अभाव में जी रहे परिवारों को शिक्षा, संस्कार के साथ स्वाभिमान और स्वावलंबन की शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा संचालित प्रतिभा विकास केन्द्र कर रहे हैं। वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन की गतिविधियों में शामिल दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, झारखंड, ओडिशा, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु,असम, राजस्थान प्रदेश।

क्या है संस्कार रक्षा परिवार

- संस्कारित परिवार ही पृथ्वी का स्वर्ग है। इसे प्राप्त करने के लिए किए जाने वाले दैनिक कार्य के द्वारा परिवार को संस्कारित कर यह आनंद प्रत्येक मनुष्य प्राप्त कर सकता है। अपने परिवार में दैनिक अभ्यास हेतु कार्यक्रम के अनुसार गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र का तीन-तीन बार उच्चारण, पुरुषार्थ जागरण मंत्र, क्षमा स्तुति मंत्र, नवग्रह मंत्र के साथ भारत वंदन मंत्र। प्राणायाम तथा योग का अभ्यास। मंगल गीत या भजन का गायन। घर में तुलसी गिलोय के पौधे का रोपण। उपायुक्त स्थान देखकर नीम, पीपल, बरगद आदि वृक्षों का रोपण तथा पोषण। स्वदेशी भाषा, वेशभूषा एवं वस्तु का उपयोग। चीनी सामानों का पूर्ण बहिष्कार।

- वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन का लक्ष्य
- दिल्ली एनसीआर क्षेत्र में 9,00,000 परिवारों को संस्कार परिवार की दैनिक गतिविधियों से जोड़ना।
- 25000 परिवार को वनवासी रक्षा परिवार बनाना अर्थात सहयोग परिवार बनाना।
- महिलाओं को विशेष रूप से संस्कार परिवार योजना तथा प्रतिभा विकास केन्द्र के साथ जोड़ना।
- युवाओं को प्रतिभा विकास केंद्र के साथ समाज जागरण की गतिविधियों से जोड़ना।
- समाज प्रबोधन के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- वनयात्रा द्वारा नगरीय समाज को वनवासी समाज से भावात्मक तथा क्रियात्मक रूप से जोड़ना।
- वनवासी तथा नगरीय क्षेत्र में शक्तिपुंज विकसित करन

इनका रह सहयोग

- वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विशेष रूप से रमेश गुप्ता, अशोक अग्रवाल, ललित बंसल, राजेश अग्रवाल, राम किशोर बिंदल, संजय लोढ़ा, कमलकांत गोयल, धर्मेन्द्र कौशिक विशिष्ट अतिथि सुरेन्द्र चावला, जीतमल चौरड़िया, यशपाल मेहंदीरत्ता, विनय छाबड़ा,सुभाष अग्रवाल, सचिन बंसल, सत्येन्द्र प्रकाश, राजेन्द्र जिंदल, शिक्षाविद डॉ.प्रशांत भल्ला, बी.आर.भाटिया, मोहन लाल बंसल,अशोक गुप्ता, सज्जन कुमार जैन, किशन अग्रवाल बीकानेरवाला, संदीप अग्रवाल, जी.एन.गुप्ता, डॉ. प्रताप चौहान का सहयोग उल्लेखनीय रहा।

इसकी रही विशेष

- इस कार्यक्रम की आयोजन समिति संयोजक सुरेन्द्र चावला, कार्यकारी संयोजक मयंक शेखर, श्रीराम अग्रवाल सह-संयोजक, राजेश दत्ता, शशि आजाद, प्रवीण मित्तल, रामचन्द्र चौधरी, दीपक अग्रवाल, अजय गुप्ता, विष्णु अग्रवाल, मंगेश निंभोरकर की विशेष भूमिका रही।

वनवासी रक्षा परिवार का परिवार मिलन समारोह संपन्न

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यवाह भैयाजी जोशी व केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल हुए शामिल

दिल्ली / फरीदाबाद। हरियाणा ब्यूरो चीफ मोहन तिवारी।

वनवासी रक्षा परिवार का परिवार मिलन समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर कार्यवाह भैयाजी जोशी व केंद्रीय मंत्री एवं पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रभु श्रीराम ने जिस वनवासी समाज को संगठित कर आसुरी शक्तियों का संहार किया, समाज जीवन में मानव मूल्यों की स्थापना की, उनके जीवनादर्श से अनुप्राणित वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन अपने प्रतिभा विकास केन्द्रों के माध्यम से वंचित, उपेक्षित वर्ग के बच्चों को संस्कार युक्त शिक्षा देकर उनमें स्वावलंबन, स्वाभिमान एवं राष्ट्रभक्ति की भावना जगाने तथा उनकी अंतर्निहित प्रतिभाओं के विकास में रत है।

भारत मंडपम दिल्ली में आयोजित संस्कार परिवार स्नेह मिलन के केंद्रीय कार्यक्रम में विभिन्न प्रांतों के बच्चों द्वारा निर्मित ज्ञान-विज्ञान व कलात्मक रचनाओं की प्रदर्शनी एवं मनमोहक रंगमंचीय कार्यक्रमों की प्रस्तुति ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। सह संयोजक श्री राम अग्रवाल ने बताया कि प्रत्येक मनुष्य मान सम्मान के साथ सुख, शान्ति का जीवन जीना चाहता है जो शिक्षा संस्कार के साथ स्वरोजगार से ही प्राप्त हो सकता है। तुलसीदास ने कहा है कि पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं। अभाव में जी रहे परिवारों को शिक्षा, संस्कार के साथ स्वाभिमान और स्वावलंबन की शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा संचालित प्रतिभा विकास केन्द्र कर रहे हैं। जिसमे वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन की गतिविधियों में शामिल दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, झारखंड, ओडिशा, मध्य प्रदेश, तम्मिलनाडु,असम, राजस्थान प्रदेश है।

संस्कारित परिवार ही पृथ्वी का स्वर्ग है। इसे प्राप्त करने के लिए किए जाने वाले दैनिक कार्य के द्वारा परिवार को संस्कारित कर यह आनंद प्रत्येक मनुष्य प्राप्त कर सकता है। अपने परिवार में दैनिक अभ्यास हेतु कार्यक्रम के अनुसार गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र का तीन-तीन बार उच्चारण, पुरुषार्थ जागरण मंत्र, क्षमा स्तुति मंत्र, नवग्रह मंत्र के साथ भारत वंदन मंत्र। प्राणायाम तथा योग का अभ्यास। मंगल गीत या भजन का गायन। घर में तुलसी गिलोय के पौधे का रोपण। इसके अतिरिक्त उपायुक्त स्थान देखकर नीम, पीपल, बरगद आदि वृक्षों का रोपण तथा पोषण। स्वदेशी भाषा, वेशभूषा एवं वस्तु का उपयोग। चीनी सामानों का पूर्ण बहिष्कार जैसी गतिविधियां संचालित करना शामिल है।